हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा

HIN-527

क्षेयांक:02(30)

स्नातकोत्तर हिंदी

रश्मी केसरकर

23P0140017

201903320

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

GOA UNIVERSITY
गोय विद्यापीठ

गोवा विश्वविद्यालय

16/20

अप्रैल 2024

GOA UNIVERSITY TALEIGAO PLATEAU GOA

3/5/2024

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ट संख्या
१	दैनिक रिपोर्ट	१
२	यात्रा की संक्षिप्त जानकारी	२-३
३	अध्ययन यात्रा का उद्देश्य, महत्व और परिणाम	४
४	अनुभव	५
५	प्रस्तावना	६
६	स्वामीनारायण अक्षरधाम	७-९
७	इंडिया गेट	१०-१३
८	संगीत नाटक अकादमी, साहित्य अकादमी	१४-१८
९	लोटस टेंपल	१९-२२
१०	बिरला मंदिर	२३-२४
११	हुमायूं का मक़बरा	२५-२७
१२	दिल्ली विश्वविद्यालय	२८-३०

१३	हिंदू विश्वविद्यालय	३१-३३
१४	जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय	३४-३६
१५	कुतुब मीनार	३७-३८
१६	उग्रसेन की बावली	३९-४०
१७	राजघाट, गांधी दर्शन म्यूज़ियम	४१-४३
१८	जामा मस्जिद	४४-४६
१९	लाल क़िला	४७-५०
२०	राष्ट्रीय बाल भवन	५१-५२
२१	ताजमहल	५३-५७
२२	मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि	५८-५९
२३	वृंदावन में कृष्ण मंदिर	६०-६१
२४	निष्कर्ष	६२

दैनिक रिपोर्ट

१८/०३/२०२४	ट्रेन से सफ़र तय किया
२०/०३/२०२४	होटल-India international DX, पहाड़गंज को क़रीब १२ बजे पहुँचे और फिर अक्षरधाम चले गये।
२१/०३/२०२४	नाश्ता करके इंडिया गेट देखने गए, साहित्य एवं संगीत नाटक अकादमी, लोटस टैंपल, बिरला मंदिर, हुमायूं का मकबरा देखा।
२२/०३/२०३४	दिल्ली विश्वविद्यालय, हिंदू विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU), कुतुब मीनार देखा।
२३/०३/२०२४	आगरा में ताज महल, मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि, वृंदावन में कृष्ण मंदिर देखा।
२४/०३/२०२४	उग्रसेन की बावली, राष्ट्रीय बाल भवन, राजघाट, गांधी दर्शन म्यूज़ियम, जामा मस्जिद, लाल किला और सरोजिनी नगर गए।
२५/०३/२०२४	गोवा में आने के लिए ट्रेन में बैठे।
२६/०३/२०२४	गोवा पहुँचे।

यात्रा की संक्षिप्त में जानकारी

१८ मार्च २०२४ को हमने गोवा मडगाँव रेलवे स्टेशन से गोवा एक्सप्रेस १२७७९ में दिल्ली हजरत निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन तक का सफ़र तय किया। दो दिन और दो रात ट्रेन में गुज़ारने के बात हम २० मार्च २०२४ दोपहर को दिल्ली पहुँचे। India international DX, पहाड़गंज पर हमारा होटल था, पहले हम होटल में गए और फिर खाना पीना होने के बाद हम अक्षरधाम के लिए निकल गए। स्वामीनारायण मंदिर को देखा और उसकी जानकारी प्राप्त कर ली और फिर रात को होटल चले आये।

अगले दिन नाश्ता करके हम इंडिया गेट देखने गये। उस जगह को अच्छे से देखा जाना और फिर साहित्य और संगीत नाटक अकादमी में प्रवेश किया। पुस्तकों के साथ साथ संगीत वाद्ययंत्र को देखकर दिल खुश हो गया। वहाँ की जानकारी लेकर हमने खाना खाया और फिर लोटस टेम्पल देखने गये। आस पास के इतने शोर शराबें में हमने वहाँ पर कुछ पल की शांति महसूस की। उसके बात हम हुमायु का मक़बरा देखने चले आए। उसके बात हम बिरला मंदिर में आए भगवान के दर्शन लेकर हम होटल जाने के लिए निकल गए, रात को हम हमारे होटल पहुँच गए।

दिल्ली के विश्वविद्यालय के बारे में बहुत सुना था, इसलिए विश्वविद्यालय को देखने के लिए हम बहुत उत्तेजित थे। पहले हमने दिल्ली विश्वविद्यालय को देखा, वहाँ के हिन्दी विभाग को देखा। फिर हमने हिंदू विश्वविद्यालय को देखा, वहाँ के शिक्षकों से हमारी मुलाक़ात हो गई और वहाँ पर जो जानकारी मिली उससे आश्चर्यचकित हो गए। उस विश्वविद्यालय का इतिहास चकित करने वाला था। फिर हम जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय चले गए, हम जिस दिन वहाँ पर गए थे उससे अच्छा दिन शायद वहाँ जाने के लिए नहीं होता क्यों की हम वहाँ उनके चुनाव के दिन गए, इस तरह के चुनाव को हमने पहली बार देखा था। उस मोहोल को देखकर डर भी लग रहा था और साथ ही मज़ा भी आ रहा था। वहाँ के कैंटीन में खाना खाया और हम वहाँ का पुस्तकालय देखने चले गए, वहाँ पता चला कि उनका पुस्तकालय पूरा दिन खुला होता है, हमने पुस्तकालय को देखा और जानकारी भी हासिल कर ली। उसके बाद हम कुतुब मीनार देखने चले गए। पूरा दिन गुम गुम कर हम थक गए थे, हम फिर होटल चले आए।

अगले दिन हम आगरा जाने के लिए निकले। वहाँ पर बहुत गर्मी थी, हमने ताज महल देखा, उसकी जानकारी प्राप्त कर ली और खाना खाकर वहाँ से निकल गए। फिर हम मथुरा के लिये चल पड़े, वहाँ पर होली का उत्सव चल रहा था और हा मथुरा की होली तो बहुत प्रसिद्ध है, हमने वहाँ पर कृष्ण जन्मभूमि मंदिर को देखा, और फिर वृद्धावन मंदिर देखा और उसकी जानकारी जान ली। फिर हम दिल्ली के लिए रवाना हो गए।

अगले दिन हमने उग्रसेन की बावली देखी, फिर हमने राष्ट्रीय बाल भवन देखा और राजघाट देखने चले गए। राजघाट देखकर हमने गांधी दर्शन म्यूजियम देखा, जहां पर गांधीजी की तस्वीरे, समान देखा और उनकी जानकारी भी प्राप्त कर ली। उसके बात हमने जामा मस्जिद देखा, वहाँ का मोहोल कुछ अजीब था, वहाँ से हम लाल क़िला देखने के लिए चले गए। दिल्ली में आकर सरोजिनी जाना तो बनता है, हमने वहाँ पर मन भर कर शॉपिंग की और होटल लोट गए।

२५ मार्च २०२४ को हम गोवा लोटने के लिए तिरुअनंतपुरम सेंट्रल २२६५४ में बैठ गए। २६ मार्च २०२४ को हम सुबह ११ बजे गोवा पहुँच गए।

अनुभव

सीखने-सिखाने के प्रयासों में ज्ञान को विश्वविद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़ने की बात अकसर होती है। इस शैक्षणिक भ्रमण में परिवेशीय वस्तुओं और घटनाओं के साथ अन्तःक्रिया करने का अवसर मुझे मिला। नई नई जगह देखने के साथ साथ उनकी जानकारी भी मिली। उन जगह का इतिहास, वहाँ के लोग, वहाँ की संस्कृति, उनका रहन-सहन आदि के बारे में पता चला। दिल्ली के बारे में मैंने जैसा सुना था वैसा ही पाया। वहाँ का मोहल कुछ अलग होने का अनुभव मुझे हुआ। शिक्षक और मेरे साथ पढ़ने वाले विद्यार्थी के साथ समय बिताने मिला उन्हें अच्छे से समझने और जानने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने इस यात्रा के दौरान जो कुछ देखा, जाना और समझा वह हमेशा मुझे याद रहेगा और वह मेरे लिये लाभदायक होगा।

अध्ययन यात्रा का उद्देश्य

- विद्यार्थियों को अध्ययन-यात्रा के स्वरूप से परिचित कराना।
- क्षेत्र-विशेष के भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व से परिचित कराना।
- छात्रों में दल-निष्ठा, नेतृत्व क्षमता, साहस, आत्मविश्वास, अवलोकन और शोध-प्रवृत्ति को परखना एवं विकसित कराना।
- पुरातात्त्विक संदर्भ और साक्ष्य को एकत्र करना।

अध्ययन यात्रा का महत्व

- कौशल विकास और योग्यता निर्माण को बढाना।
- स्थिति का आलोचनात्मक विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी का आत्म-विकास एवं आत्म-साक्षात्कार करना।
- क्षेत्र में अध्ययन-यात्रा कर वहाँ की भौगोलिक संरचना, ऐतिहासिक महत्त्व, परिवेश, लोक- जीवन, बोली-भाषा, खाद्य-संस्कृति, साहित्य, नृत्य, वास्तुकला, समस्याओं आदि का अध्ययन करना अपेक्षित है।
- अध्ययन दौरा अनुभवात्मक सीखने पर जोर देता है और समूह और स्व-निर्देशित दोनों गतिविधियों की पेशकश करता है जो शिक्षार्थियों को विभिन्न उद्योगों की संस्कृतियों, प्रथाओं और लोगों का पता लगाने में सक्षम बनाता है।

अध्ययन यात्रा का परिणाम

- क्षेत्र-विशेष के भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व से परिचित होंगे।
- छात्र अपने अंदर दल-निष्ठा, साहस, आत्मविश्वास, अवलोकन, नेतृत्व क्षमता, और शोध- प्रवृत्ति आदि को परखेंगे और उसे विकसित करेंगे।
- पुरातात्त्विक संदर्भ और साक्ष्य को एकत्र करेंगे।

प्रस्तावना

शैक्षिक भ्रमण विद्यार्थियों को रोचक ढंग से पढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इससे उन्हें चीजों को बेहतर तरीके से सीखने में मदद मिलती है। पुस्तकें सैद्धांतिक ज्ञान देती हैं जबकि शैक्षिक भ्रमण वास्तव में उस स्थान पर जाकर अभ्यास ज्ञान प्रदान करता है। शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए महत्वपूर्ण कड़ी है। ये भ्रमण विद्यार्थियों को अपने और दूसरों के अनुभव से सीखने का एक अच्छा अवसर देते हैं। जब विद्यार्थी शैक्षणिक भ्रमण पर जाते हैं तो वे अपनी आँखों से प्रत्यक्ष रूप में देखकर किसी भी विषयवस्तु का वर्णन करने में सक्षम हो जाते हैं। उनके भ्रम और मिथ्या धारणाएँ दूर होती हैं।

शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया जाता है ताकि वे विविध जलवायु, वातावरण, विकास, इतिहास, संस्कृति, उद्योग जगत से वास्तविक रूप से अवगत हो सकें। नई जगहों की यात्रा करने से छात्रों को नए अनुभव प्राप्त करने और नए व्यावहारिक सबक सीखने में मदद मिलती है।हां, 'यात्रा करें और सीखें' एक महान अवधारणा है क्योंकि यह घटनाओं की वास्तविकता और वास्तविक घटनाओं से संबंधित है। नए लोगों से मिलने से लेकर नई छोटी-बड़ी कंपनियों को देखने, नई तरह की मशीनरी देखने से लेकर नए व्यंजन खाने तक, सब कुछ नए सिरे से होता है।

अक्षरधाम

अक्षरधाम का अर्थ है ईश्वर का दिव्य निवास. ये भक्ति, पवित्रता और शांति के स्थान रूप में जाना जाता है। नई दिल्ली में स्वामीनारायण अक्षरधाम मंदिर भक्ति सीखने और सद्भाव के लिए समर्पित है। अक्षरधाम मंदिर का निर्माण बी.ए.पी.एस. यानी बोचासनवासी श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था की ओर से किया गया हैं। इस मंदिर के निर्माण में भगवान स्वामीनारायण की अध्यात्म परम्परा के पांचवें उत्तराधिकारी “प्रमुखस्वामी महाराज” का महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर का उद्घाटन 6 नवंबर साल 2005 में हुआ। जिसे 8 नवंबर 2005 में आम जनता के लिए खोल दिया गया था।

मंदिर के प्रवेशद्वार पर 16 मांगलिक चिहनों से अंकित ये श्री-हरि चरणारविंद इस धरा पर भगवान श्रीस्वामिनारायण के दिव्य अवतरण की स्मृति में स्थापित किये गये है। श्वेत संगमरमर से शिल्पांकित इस श्रीहरि-चरणारविंद पर चार शंखों द्वारा जलधाराओं का अभिषेक, भगवान श्रीस्वामिनारायण के ऐतिहासिक जीवन एवं कार्य के प्रति भावांजलि अर्पण करता है।

विशाल संकुल के मध्य भाग में गुलाबी पत्थरों से निर्मित भव्य अक्षरधाम मंदिर। इसकी ऊँचाइ 108 फूट, चौड़ाई 131 फूट तथा लंबाई 240 फूट है; जिसमें खूबसूरत नक्काशी किए हुए 97 स्तंभ, 17 देदिप्यमान गुम्बद, 8 अलंकृत बरामदे तथा खूबसूरत ढंग से शिल्पांकित की गई 264 मूर्तियाँ है। प्राचीन भारतीय परंपरागत शैली में निर्मित, इस भव्य मंदिर के निर्माण में कहीं भी किसी भी रूप में लौहे का उपयोग नहीं किया गया है। खूबसूरत उद्यानों एवं घास से हरे-भरे मेदानों से घिरे अक्षरधाम मंदिर को 514 मीटर लम्बी परिक्रमा चारों ओर से पुष्पहार की भाँति सुशोभित कर रही है।

मंदिर का मध्यवर्ती कक्ष, हरिमण्डपम् के नाम से जाना जाता है। हरिमण्डपम् के मध्य में 7 फूट उँची भगवान श्रीस्वामिनारायण की स्वर्णमंडित मूर्ति नयनाभिराम है।

मंदिर का ऊपरी खण्ड है: 'स्वामिनारायण दर्शन'। सन् 1781 से सन् 1830 दौरान भगवान श्रीस्वामिनारायण ने इस पृथ्वी को अपने दिव्य सान्निध्य से पावन की थी। अपूर्व चित्रों के माध्यम से 'स्वामिनारायण दर्शन' उनके जीवन को पुनर्जीवित करता है।

अक्षरधाम मंदिर के आंतरिक भाग को नौ मंडपम या विषयगत स्थानों में विभाजित किया जा सकता है। ये नौ मंडप जटिल नक्काशीदार मूर्तियों और स्तंभों से भरे हुए हैं और अद्वितीय गुंबदों और छत से ढके हुए हैं। इन मंडपों के माध्यम से यात्रा करते हुए, व्यक्ति प्रसिद्ध भक्तों, महान अवतारों और आनंदित दिव्य प्राणियों से मिलता है। मंडपों के अलंकृत डिजाइन

और जटिल नक्काशी भगवान की अकल्पनीय सुंदरता और सृष्टि में उनके द्वारा प्रेरित सुंदरता के प्रतिबिंब को प्रेरित करती है।

पारंपरिक पत्थर से बने मंदिर के बाहरी हिस्से को मंडोवर के नाम से जाना जाता है। स्वामीनारायण अक्षरधाम का मंडोवर पिछले आठ सौ वर्षों में भारत में बनाया गया सबसे बड़ा, सबसे जटिल नक्काशीदार मंडोवर है। यह 25 फीट ऊंचा, 611 फीट लंबा है और इसमें हिंदू धर्म के कई महान ऋषियों, साधुओं, भक्तों, आचार्यों और अवतारों की 200 मूर्तियां हैं। मंडोवर के आधार को जगती कहा जाता है। इस परत में हमारी रोजमर्रा की दुनिया के जीवित प्राणियों की नक्काशी मिलती है। सबसे पहले, हमारे पास हाथी है जो शक्ति का प्रतीक है, फिर शेर है, जो बहादुरी और क्रूरता का प्रतीक है। इसके बाद, व्यक्ति को व्याल (एक पौराणिक जानवर) मिलता है जो गति के लिए प्रसिद्ध था।

सम्मान और प्रार्थना के संकेत के रूप में प्रदक्षिणा या परिक्रमा करना एक प्राचीन हिंदू परंपरा है। श्रद्धालु इस विश्वास को मजबूत करने के लिए मंदिरों के चारों ओर दक्षिणावर्त घूमते हैं कि भगवान को किसी के जीवन का केंद्र होना चाहिए।
अक्षरधाम मंदिर में, इन परिक्रमाओं को करने का मार्ग तीन 60 फीट लंबे कांस्य राहत पैनलों से सजाया गया है। ये पैनल भगवान स्वामीनारायण के जीवन की दिव्य घटनाओं का वर्णन करते हैं और इन मार्गों पर चलने वाले श्रद्धालुओं को परिक्रमा करते समय भगवान को याद करने में मदद करते हैं। मंदिर की वह परत जहां ये पैनल स्थापित हैं, नारायण पीठ के नाम से जानी जाती है।

एक मंदिर पारंपरिक और प्रतीकात्मक रूप से हाथियों के कंधों पर खड़ा होता है। एक अनोखे रचनात्मक रूपांतरण में, स्वामीनारायण अक्षरधाम के आधार पर हाथी अभी भी खड़े नहीं हैं। गजेंद्र पीठ या हाथी पीठ प्रकृति, मनुष्य और भगवान के साथ हाथियों की कहानियां और किंवदंतियां प्रस्तुत करती है। हाथियों का यह चित्रण इन भव्य लेकिन सौम्य जानवरों का सम्मान करने के साथ-साथ शांति, सुंदरता और सौम्यता के संदेश भी साझा करता है। गजेंद्र पीठ, निचली प्रदक्षिणा, स्वामीनारायण अक्षरधाम की एक अनूठी, मनोरम विशेषता है और एक प्राचीन स्थापत्य परंपरा का एक प्रेरक पुनरुद्धार है। मयमतम, शिल्पा रत्नाकर, दीपर्णव और अन्य जैसे प्राचीन वास्तुशिल्प ग्रंथों में महलों और मंदिरों के लिए गजस्थान (हाथियों का चबूतरा) का उल्लेख किया गया है। यह परंपरा एलोरा के 1300 वर्ष पुराने प्राचीन कैलास मंदिर और 1400 वर्ष पुराने महाबलीपुरम मंदिर में पाई जाती है। 12वीं शताब्दी से पहले, कई मंदिरों में गजस्तर रखकर इस परंपरा का पालन किया जाता था। स्वामीनारायण अक्षरधाम का विशाल गजस्थान इस परंपरा की साहसिक वापसी का प्रतीक है।

अक्षरधाम की इस परंपरा का अनूठा पुनरुद्धार एक नए प्रेरणादायक, कलात्मक नवाचार के साथ आता है। पुराने मंदिरों में देखी गई अनुक्रमिक प्रतिकृति के बजाय, यह हाथियों से संबंधित प्रेरक घटनाओं को चित्रित करता है - जैसे कि कैसे हाथी और मनुष्य घनिष्ठ संबंध साझा करते हैं, कैसे हाथियों को परमात्मा से आशीर्वाद मिला और पंचतंत्र की कहानियां।

बाद की परतों में, फूलों की नक्काशी मिलती है जो सुंदरता और सुगंध का प्रतीक है। मंडोवर के मध्य में, जिसे विभूति के नाम से जाना जाता है, अवतारों, ऋषियों, देवों, आचार्यों और भक्तों की मूर्तियां हैं। और इस परत के शीर्ष पर समरान हैं जो लोगों को जीवन में आध्यात्मिक ऊंचाई के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। संपूर्ण मंडोवर एक व्यक्ति को अपने जीवन को सांसारिक सुखों के बंधनों से मुक्त करने और ईश्वर-प्राप्ति की अंतिम स्थिति तक पहुंचने के लिए प्रेरित करता है।

अक्षरधाम मंदिर का एक और आकर्षण गार्डन ऑफ़ इंडिया है, मुख्य रूप से यह मंदिर के क्षेत्र में बना हरा लॉन है। इस गार्डन में बहुत सी कांसे की मूर्तियाँ बनी हुई है जो देश के कुछ महापुरुषों को श्रधांजलि देते हुए नजर आते है जैसे सैनिक, बाल हीरो और महान महिलाये और महापुरुष देशभक्त। अक्षरधाम मंदिर की मुख्य ईमारत एक सरोवर से घिरी हुई है जिसे नारायण सरोवर कहा जाता है, जिसमे देश की तक़रीबन 151 विशाल सरोवर और नदियों का पानी भरा हुआ है। सरोवर के पास ही में 108 गौमुख भी बने हुए है और माना जाता है की यह 108 गौमुख 108 हिन्दू भगवान का प्रतिनिधित्व करते है।

अक्षरधाम मंदिर में एक और आकर्षित गार्डन है जिसे कमल बाग़ भी कहा जाता है, इसका नाम इसके आकार के आधार पर ही रखा गया है। यह गार्डन पवित्रता का स्वरुप है। कहा जाता है की इतिहास के कई महापुरुष, दर्शनशास्त्री और वैज्ञानिक इस गार्डन में आये थे। अक्षरधाम में दर्शनार्थियों के आकर्षण के लिए बहोत से आकर्षण है। इस मंदिर में बहोत सी इमारते और आकर्षित स्तम्भ बने हुए है। जो भारतीय इतिहास की महानता और संस्कृति को दर्शाते है।

इंडिया गेट

इंडिया गेट, भारतीय ब्रिटिश आर्मी के उन सैनिकों को समर्पित एक स्मारक हैं जो प्रथम विश्व युद्ध एवं तीसरे एंग्लो-अफगान युद्ध के दौरान वीरगति को प्राप्त हुए थे। इस स्मारक को अमन जवान ज्योति" और "अखिल भारतीय युद्ध स्मारक" (ऑल इंडिया वॉर मेमोरियल) के नाम से भी जाना जाता है।

इस स्मारक की दीवारों पर देश की रक्षा के लिए मर मिटने वाले हजारों सैनिकों के नाम लिखे गए हैं। यह भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से भी एक हैं, जिसके सुंदरता और आर्कषण को देखने दुनिया के कोने-कोने से लोग आते हैं।

इंडिया गेट पर हर साल गणतंत्र दिवस पर विशाल परेड का आयोजन होता है। इस भव्य गेट की ऊंचाई करीब 42 मीटर है, जिसमें मशहूर वास्तुकार एडविन ल्यूटियन्स ने एक फ्रांसीसी स्मारक आर्क-डी-ट्रायोम्फ की तर्ज पर डिजाइन किया है।

भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित इंडिया गेट भारत का एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय स्मारक होने के साथ-साथ भारत के बड़े युद्ध स्मारकों में से एक है, जिसे 'अखिल भारतीय युद्ध स्मारक' के रूप में भी जाना जाता है। इंडिया गेट से प्रथम विश्व युद्ध के दौरान शहीद हुए तमाम वीर सैनिकों की यादें जुड़ी हुई हैं, यह स्मारक भारतीय सेना के सैनिकों के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण स्थल है। आपको बता दें कि इंडिया गेट, भारत के सबसे महत्वपूर्ण विरासतों में गिना जाता है।

भारत की राजधानी दिल्ली के राजपथ मार्ग पर स्थित इंडिया गेट निर्माण 1931 ईसवी में किया गया था। साल 1914 से 1918 के बीच चले पहले विश्व युद्ध और तीसरे एंग्लो-अफगान युद्ध में ब्रिटिश इंडियन आर्मी के करीब 90 हजार सैनिकों ने अपने शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए बड़ी वीरता के साथ दुश्मन सेना से युद्ध लड़ा था, हालांकि इस युद्ध में करीब 82 हजार सैनिकों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी।

इस युद्ध के दौरान वीरगति को प्राप्त हुए सैनिकों के सम्मान और उन्हें श्रंद्धाजंली अर्पित करने के लिए दिल्ली के राजपथ में इस राष्ट्रीय स्मारक इंडिया गेट का निर्माण किया गया था। शुरुआत में इस स्मारक का नाम "ऑल इंडिया वॉर मेमोरियल" रखा गया था, लेकिन बाद में इसका नाम बदलकर इंडिया गेट कर दिया गया।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सेना के हजारों जवान फ्लैंडर्स मेसोपोटामिया, फ्रांस, पूर्वी अफ्रीका गैलीपोली समेत कई अन्य स्थानों पर लड़ते हुए शहीद हो गए थे, उन सैनिकों के सम्मान और स्मृति में ही इस अद्भुत शहीद स्मारक का निर्माण किया गया था।

लाल बलुआ पत्थर और ग्रेनाइट से निर्मित भारत की इस भव्य शहीद स्मारक की दीवारों में बेहद सृजनात्मक और अनूठे तरीके से इन हजारों शहीदों का नाम भी लिखो गए हैं। इसके साथ ही आपको बता दें कि 15 अगस्त, 1947 से पहले जब देश ब्रिटिशों की गुलामी सह रहा था, तब इंडिया गेट के सामने किंग जॉर्ज वी की एक प्रतिमा स्थापित थी।

लेकिन आजादी मिलने के बाद इस प्रतिमा को हटाकर ब्रिटिश राज की अन्य प्रतिमाओं के साथ कोरोनेशन पार्क में स्थापित कर दिया गया था। देश की इस अनमोल धरोहर में समय-समय पर कई संसोधन भी किए जाते रहे हैं।

जिसकी वजह से दिल्ली के राजपथ पर स्थित यह स्मारक सैनिकों का एक महत्वपूर्ण स्मारक बन गया है। साल 1971 में भारत-पाकिस्तान के युद्ध के समय शहीद होने वाले तमाम भारतीय सैनिको के सम्मान में यहां ”अमर जवान ज्योति” की स्थापना की गई, जहां साल के 365 एवं 24 घंटे, हमेशा ही सैनिकों के सम्मान में एक लौ जलती रहती है।

भारत के इस सबसे बड़े शहीद स्मारक के तल पर ”अमर जवान ज्योति” बना हुआ है, जो कि देश के उन जवानों के त्याग, बलिदान और कुर्बानियों की याद दिलवाता है, जिन्होंने भारत-पाकिस्तान के युद्ध में अपनी देश की रक्षा करते हुए अपनी जान न्योछावर कर दी थी।

इन वीर सैनिकों के शहादत के सम्मान में साल 1971 में अमर जवान ज्योति का निर्माण किया गया है। इस शहीदों को समर्पित स्मारक का शुभारंभ 26 जनवरी, सन् 1972 में भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी ने किया था और उस समय उन्होंने देश के लिए मर मिटने वाले सैनिकों को इस स्मारक पर भावपूर्ण श्रद्धांजली अर्पित की थी।

तभी से हर साल गणतंत्र दिवस के मौके पर परेड के आयोजन से पहले भारत के प्रधानमंत्री एवं तीनों सेनाओं के प्रमुख और सभी मुख्य अतिथियों के द्धारा अमर जवान ज्योति पर पुष्प चढ़ाकर शहीदों को इस स्मारक पर सच्चे मन से श्रद्धांजली दी जाती है। इसके अलावा इस शहीद स्मारक पर शहीद दिवस एवं विजय दिवस समेत अन्य मौके पर भारत के तीनों सेना के प्रमुखों के द्धारा शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित की जाती है।

दिल्ली में स्थित अमर जवान ज्योति संगमरमर का बना हुआ है, जिसमें बड़े अक्षरों में 'अमर जवान ज्योति' लिखा गया है। इसके साथ ही इस स्मारक के ऊपर L1A1 एक स्व-लोडिंग राइफल रखी गई है। जिस पर एक सैनिक का हेलमेट शोभा दे रहा है।

अमर जवान ज्योति की खास बात यह है कि यहां शहीदों की याद में हमेशा एक अन्नत लौ प्रज्जवलित रहती है, जो कि भारत-पाक युद्ध के समय अपनी जान कुर्बान करने वाले सैनिकों को श्रद्धांजली है। आपको बता दें कि भारत की इस सबसे बड़े शहीद स्मारक "अमर जवान ज्योति" की लौ हमेशा सीएनजी गैस से जलती रहती है, जिसकी आपूर्ति एक गैस पाइपलाइन के माध्यम से की जाती है।

यह गैस पाइपलाइन, दिल्ली के कस्तूरबा मार्ग से करीब आधा किलोमीटर की दूरी पर स्थित अमर जवान ज्योति तक बिछाई गई है। सैनिकों के इस महत्वपूर्ण स्थल पर 1 नहीं बल्कि 4 जोत रखी गईं हैं, जिनमें से सिर्फ एक जोत ही ऐसी है, जो कि हमेशा जलती रहती है, जबकि अन्य 3 जोतों को भारत के राष्ट्रीय पर्व 15 अगस्त या फिर 26 जनवरी पर ही जलाया जाता है।

वहीं दिल्ली में स्थित इस महत्पूर्ण सैन्य स्मारक की सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखा गया है। इस शहीद स्मारक की सुरक्षा के लिए हमेशा भारतीय सेना, भारतीय नौसेना और वायु सेना के सैनिक तैनात रहते हैं और 24 घंटे इसकी पहरेदारी करते हैं, ताकि युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए सैनिकों की स्मृति में बने इस स्मारक को किसी की तरह का नुकसान न पहुंचे।

दिल्ली में स्थित भारत का यह सबसे बड़ा युद्ध स्मारक इंडिया गेट सैनिकों के लिए एक बेहद महत्वपूर्ण स्थल है। इंडिया गेट, भारत की शान है जो कि देश के लिए अपनी जान की कुर्बानी देने वाले वीर सैनिकों की शहादत को याद दिलवाता है, इसलिए देश के इस सबसे बड़े शहीद स्मारक के प्रति समस्त भारतवासियों के हृद्य में अपूर्व सम्मान है।

INDIA

INDIA

हिंदू कॉलेज

किनारी बाजार से कश्मीरी गेट और कश्मीरी गेट से नॉर्थ कैंपस..., डीयू के हिंदू कॉलेज का 1899 से शुरू हुआ सफर दिल्ली यूनिवर्सिटी के 100 साल के सफर से ज्यादा पुराना और रोमांचक है। स्वदेशी आंदोलन से लेकर असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो के नारों से लेकर विभाजन के दर्द को इस कॉलेज ने खुद में समाया। इस कॉलेज के स्टूडेंट्स सिर्फ किताबी में ही नहीं डूबे, बल्कि देश की आजादी के लिए भी सड़कों पर उतरे। कल भी यह कॉलेज स्टूडेंट्स की आवाज था और आज भी साइंस, ह्यूमैनिटीज, कॉमर्स ही नहीं, एक आजाद कैंपस के लिए भी देशभर के स्टूडेंट्स की टॉप पसंद है।

1899 में यह कॉलेज पुरानी दिल्ली के कृष्ण गुड़वाले ने खड़ा किया, दिल्ली के नामी लोग इसके ट्रस्टी बने। ऐसा कहा जाता है कि सेंट स्टीफ़न कॉलेज मे उन्हें हिंदू होने के कारण नहीं लिया गया इसलिए उन्होंने हिंदू कॉलेज की स्थापना की। तबसे सेंट स्टीफन कॉलेज और हिंदू कॉलेज के बीच लंबे समय से एक प्रतिद्वंद्विता और प्रतिस्पर्धा चली आ रही है। दोनों कॉलेज अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। हिंदू कॉलेज ज्यादा सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध है, जबकि सेंट स्टीफन कॉलेज अपनी शैक्षिक उपलब्धियों और खेल प्रतिभा के लिए जाना जाता है। दोनों कॉलेजों के छात्रों के बीच प्रतिस्पर्धा काफी तेज होती है और वे एक-दूसरे के खिलाफ अपनी श्रेष्ठता साबित करने की कोशिश करते रहते हैं। यह प्रतिद्वंद्विता और प्रतिस्पर्धा अक्सर उत्सवों, खेलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में देखने को मिलती है। इसका एक उदाहरण: सेंट स्टीफ़न ने अपने कॉलेज के दिवारो पर लिखा था कि यहाँ कुत्ते और हिंदू कॉलेज के स्टूडेंट्स का आना मना है, इसके उत्तर में हिंदू कॉलेज ने लिखा कि यहाँ कुत्ते तो आ सकते है पर सेंट स्टीफ़न के विद्यार्थी नहीं आ सकते। इसे यह पता चलता है कि उनमें कितनी नफ़रत थी।

1922 में दिल्ली यूनिवर्सिटी बनी और हिंदू कॉलेज इससे जुड़ गया। पहले यह पंजाब यूनिवर्सिटी से मान्यता प्राप्त था। उस वक्त यहां सिर्फ एम हिंदी कोर्स पढ़ाया जाता था। ब्रिटिश राज से आजादी की मांग तेज हो रही थी और हिंदू कॉलेज के स्टूडेंट्स ने हमेशा ही आजादी और लोकतंत्र का नारा उठाया। कॉलेज पार्लियामेंट तक बनी, जिसे समय समय पर देश के नामी चेहरों ऐनी बेसेंट, राजेंद्र प्रसाद, जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद ने संबोधित किया। यही वो कॉलेज था जिसने क्रांतिकारी चंद्रशेखर बोस को अपने हॉस्टल में शरण दी थी। जब 'साइमन गो बैक' के नारे भारत में गूंज रहे थे, तब इस कॉलेज के लड़के ही नहीं, लड़कियां भी चांदनी चौक में जुलूस में जोश भरते थे। 1930 में महात्मा गांधी ने भी इस कॉलेज का दौरा किया।

थिएटर हिंदू कॉलेज के स्टूडेंट्स का पैशन था और आज भी है। 1960 में कॉलेज को खास ऑडिटोरियम मिला, जिसका स्टेज मशहूर थिएटर डायरेक्टर इब्राहिम अलकाजी ने डिजाइन किया। 1970 से 80 के बीच पढ़ाई के अलावा, अपने स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, 30-25 सोसायटी, शानदार लाइब्रेरी से भी कॉलेज ने देशभर के स्टूडेंट्स को खींचा। अपनी प्लैटिनम जुबली में कॉलेज का मशहूर सालाना जलसा 'MECCA'लॉन्च हुआ। हिंदू कॉलेज ओल्ड स्टूडेंट्स असोसिएशन के प्रेजिडेंट रवि बर्मन कहते हैं, मैं 72-75 तक यहां स्टूडेंट रहा। यह फेस्ट मैंने ही कुछ और स्टूडेंट्स के साथ मिलकर शुरू किया था और इसे देखने कई कॉलेजों के स्टूडेंट्स आते थे। यह फेस्ट कॉलेज की शान बना। हिदू कॉलेज की प्रिंसिपल प्रो अंजू श्रीवास्तव कहती हैं, इस कॉलेज का इतिहास इसके वर्तमान की तरह शानदार है। दो साल में यह कॉलेज अपना 125वां साल का जश्न मनाएगा। 13 स्टूडेंट्स से शुरू हुए इस कॉलेज में आज 4,000 से ज्यादा स्टूडेंट्स हैं। साइंस, ह्यूमैनिटीज से लेकर थिएटर, डांस हर फील्ड में 40 सोसायटी के साथ इसके स्टूडेंट्स नाम कर रहे हैं।

कॉलेज का मुख्य भवन एक शानदार और ऐतिहासिक इमारत है, जिसका निर्माण 1927 में किया गया था। इस भवन की वास्तुकला में ब्रिटिश-भारतीय शैली का प्रभाव देखा जा सकता है। इमारत की ऊंची छतों, विशाल खिड़कियों और सुंदर गुंबदों के कारण यह काफी प्रभावशाली लगता है। कैंपस के अंदर कई और भवन भी हैं, जिनमें प्रशासनिक ब्लॉक, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, छात्रावास और खेल संकुल शामिल हैं। कैंपस में एक खूबसूरत मुख्य मैदान भी है, जहां छात्र खेल-कूद और अन्य गतिविधियां आयोजित करते हैं। कैंपस के अंदर कई हरे-भरे पेड़-पौधे और सुंदर फूलों की बगीचियां भी हैं, जो इसे और भी सुंदर और हरा-भरा बनाते हैं। छात्रों के लिए यह एक शांत और सुंदर वातावरण प्रदान करता है। शिक्षण कार्य के अतिरिक्त, कॉलेज में कई सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों का आयोजन भी होता रहता है। इन गतिविधियों में नृत्य, संगीत, नाटक और कविता पाठ जैसी कार्यक्रम शामिल होते हैं।
इस कालेज के हास्टल में बहुत ही प्रतिभावान छात्रों ने रहकर पढ़ाई की है। जिसमें इम्तियाज अली, अर्जुन रामपाल हैं। इस हास्टल में 119 कमरे में कुल 220 छात्र रहते हैं। जिसमें से 10 कमरे दो बिस्तर वाले तथा 109 कमरे एक बिस्तर वाले हैं। छात्राओं के लिए भी हास्टल बनकर तैयार है। हास्टल में छात्रों को वाई फाई, चिकित्सकीय सुविधा के अलावा बालीबाल,टेनिस, बैडमिंटन और कैरम की सुविधा है। इसके अलावा कामन रूम और टीवी रूम भी है। छात्रों को 24 घंटे ठंडा पानी मिले इसकी भी सुविधा है।

इस कालेज के कई छात्रों ने देश विदेश में कालेज का नाम रोशन किया है। प्रसिद्ध चरित्र अभिनेता मोतीलाल और नायक मनोज कुमार भी इस कालेज के छात्र थे। सुब्रमण्यम स्वामी, विनोद राय (पूर्व निदेशक, नियंत्रक महालेखा परीक्षक), गौतम गंभीर, अमिताभ वर्मा

(प्रशासनिक अधिकारी), इम्तियाज अली, अर्जुन रामपाल, मुरली कार्तिक, कंचन आजाद आदि छात्र हैं।

संगीत नाटक अकादमी

संगीत नाटक अकादमी की स्थापना भारत सरकार द्वारा वर्ष 1952 में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय संगीत, नृत्य और नाटक के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार को बढ़ावा देना है। यह देश की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और प्रोत्साहित करने वाली सर्वोच्च सांस्कृतिक संस्था है। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। संगीत नाटक अकादमी प्रतिवर्ष देश के उत्कृष्ट कलाकारों को सम्मानित करती है और उनकी कलात्मक उपलब्धियों के लिए उन्हें पुरस्कार प्रदान करती है। प्रमुख पुरस्कारों में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, फेलोशिप, अवार्ड ऑफ होनर आदि शामिल हैं। इसके अलावा, अकादमी देशभर में कई शिविरों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और संगोष्ठियों का भी आयोजन करती है ताकि लोग विभिन्न भारतीय कलाओं से परिचित हो सकें। संगीत नाटक अकादमी भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संग्रह: इसमें 35,000 से अधिक पुस्तकें, पत्रिकाएं, पुरातन हस्तलिखित ग्रंथ, ऑडियो/वीडियो रिकॉर्डिंग, फोटोग्राफ और भारतीय लोक कलाओं से संबंधित अन्य सामग्री शामिल है।
होल्डिंग्स: यहां संगीत, नृत्य, नाटक के दुर्लभ और प्राचीन ग्रंथ, शास्त्र और हस्तलिखित पांडुलिपियां उपलब्ध हैं।
संदर्भ सेवाएं: यह विद्वानों, शोधकर्ताओं, छात्रों और लोक कलाओं में रुचि रखने वालों को संदर्भ और प्रलेखन सेवाएं प्रदान करता है।
विशेष संग्रह: नारायण मेनन कथकली संग्रह, बलवंत गर्गी भारतीय रंगमंच संग्रह और मत्तीलाल मालिक हिंदुस्तानी संगीत संग्रह जैसे विशेष संग्रह यहां उपलब्ध हैं।
पहुंच: लाइब्रेरी सदस्यों और विद्वानों के लिए संदर्भ और उधार सुविधा के लिए खुली है। गैर-सदस्य केवल संदर्भ के लिए पहुंच सकते हैं।
डिजिटलीकरण: दुर्लभ पुस्तकों, हस्तलिखित ग्रंथों और रिकॉर्डिंग्स को संरक्षण और व्यापक पहुंच के लिए डिजिटलीकृत करने का प्रयास किया जा रहा है।

गठन एवं संरचना
यह एक स्वायत्त निकाय है जिसे संसद के एक अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया था।
इसके अध्यक्ष और अन्य सदस्यों की नियुक्ति केंद्र सरकार द्वारा की जाती है।
इसकी एक परिषद है जिसमें विशेषज्ञ सदस्य शामिल होते हैं। कार्य एवं गतिविधियाँ कलाकारों को फेलोशिप, पुरस्कार और सम्मान प्रदान करना। लोक और शास्त्रीय कलाओं के संरक्षण और संवर्धन हेतु सम्मेलन, प्रदर्शनी और शिविरों का आयोजन करना। कलाकारों के कामों का प्रकाशन और प्रलेखन करना। देश भर में कला केंद्रों और संग्रहालयों की स्थापना करना।
विभिन्न कलाओं पर शोध कार्य को प्रोत्साहित करना।

सांस्कृतिक मिशन

भारत की सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा और संवर्धन। विभिन्न लोक और शास्तीय कला रूपों की पहचान और प्रचार। कलाकारों और कला समुदायों की सहायता करना।
भारतीय कलाओं की अंतरराष्ट्रीय पहचान बनाना। संगीत नाटक अकादमी कलाओं के प्रति भारत की प्रतिबद्धता और देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है।

संगीत नाटक अकादमी द्वारा संरक्षित और संवर्धित किए जाने वाले विभिन्न वाद्य यंत्रों के नाम इस प्रकार हैं:
तार वाद्य यंत्र: सितार, सरोद, वीणा, रबाब, तानपुरा, सारांगी। सुषिर वाद्य यंत्र: शहनाई, नागस्वरम्, बांसुरी, मुरली, अलगोजा, मशक। अवनद्ध वाद्य यंत्र: तबला, पखावज, ढोलक, दुन्दुभि, नगाड़ा। तात वाद्य यंत्र: सारंगी, दिलरुबा, गजरी, रबाब, रावनहत्था। घन वाद्य यंत्र: झांझ, करताल, घुंघरू, मृदंग, खंजरी इनके अलावा लोक वाद्य यंत्र जैसे - धोलक, नगाड़ा, दमाऊ, धमारी आदि भी संरक्षित किए जाते हैं। संगीत नाटक अकादमी इन वाद्य यंत्रों के संरक्षण, शिक्षण और इनकी धुनों के प्रचार-प्रसार पर विशेष ध्यान देती है।

अकादमी के पास मुखौटों और परिधानों का एक विशाल संग्रह है। इन वस्तुओं को विशेष तरीके से संरक्षित किया जाता है ताकि इनकी सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। संरक्षण विशेषज्ञ इन मूल्यवान कलाकृतियों की देखभाल करते हैं। प्रदर्शनियों में मुख्य आकर्षण मुखौटे और परिधान ही होते हैं। साथ ही उनसे जुड़ी फोटोग्राफी, चित्र, वीडियो और लिखित जानकारियां भी दी जाती हैं। कुछ परिधानों के साथ आभूषण भी प्रदर्शित किए जाते हैं। कुछ बार लाइव प्रदर्शन भी किए जाते हैं जिससे दर्शक परंपरा को समझ सकें। इन प्रदर्शनियों का उद्देश्य लोगों को भारतीय नाट्य परंपराओं से परिचित कराना और उनका महत्व बताना होता है।

कुछ प्रमुख मुखौटा और परिधान प्रदर्शनियों के बारे में जानकारीः
छाउ मुखौटा प्रदर्शनी: यह राजस्थान की लोक नाट्य परंपरा छाउ के मुखौटों को प्रदर्शित करती है। छाउ मुखौटे लकड़ी से बने होते हैं और इन्हें कलात्मक ढंग से सजाया जाता है। कुथियाट्टम मुखौटा प्रदर्शनी: केरल की कुथियाट्टम नाट्य शैली से संबंधित विभिन्न मुखौटों और परिधानों का प्रदर्शन किया जाता है। ये पारंपरिक चमड़े से बने मुखौटे होते हैं। कथकली मुखौटा प्रदर्शनी: तमिलनाडु की प्रसिद्ध कठपुतली नृत्य शैली कथकली के मुखौटों और परिधानों को प्रदर्शित किया जाता है।
चैती नाटक परिधान प्रदर्शनी: राजस्थान के चैती नाटक से संबंधित विभिन्न वस्त्र और आभूषणों की प्रदर्शनी लगाई जाती है। बहुरूपिया मुखौटा प्रदर्शनी: उत्तर प्रदेश के बहुरूपिया लोक नाटकों से जुड़े भिन्न-भिन्न मुखौटों और पोशाकों का प्रदर्शन होता है।

उपकरण निर्माण की कला को संरक्षित और बढ़ावा देने के अपने प्रयास में, अकादमी ने हाल के वर्षों में प्रतिष्ठित उपकरण निर्माताओं को अपने पुरस्कारों से सम्मानित किया है। युवा कारीगरों को अपने वंशानुगत व्यवसायों में काम करना जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, राजस्थान और कोलकाता में मास्टर कारीगरों के तहत उपकरण बनाने में प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किए गए हैं। उम्मीद है कि नवीनीकृत दीर्घाएँ और उनके प्रदर्शन संगीत के विकास और भारत की प्रदर्शन कलाओं की अन्य परंपराओं के बारे में जानकारी का प्रसार करने में मदद करेंगे और इन कलाओं में नई रुचि पैदा करेंगे।

साहित्य अकादमी

साहित्य अकादमी की स्थापना 12 मार्च, 1954 में स्वायत्त संस्था के रूप में की गई थी और इसके लिए धन की व्यवस्था भारत सरकार का संस्कृति विभाग करता है। अकादमी का समिति के रूप में पंजीकरण 1956 में हुआ था। साहित्य अकादमी ने 24 भाषाओं को मान्यता दे रखी है। प्रत्येक भाषा के लिए सलाहकार बोर्ड है जो संबद्ध भाषा के कामकाज और प्रकाशन के बारे में सलाह देता है। अकादमी के चार क्षेत्रीय बोर्ड हैं जो उत्तर, पश्चिम, पूर्व और दक्षिण की भाषाओं के बीच तालमेल और परस्पर आदान-प्रदान को प्रोत्साहन देते हैं। साहित्य अकादमी का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा कोलकाता, मुम्बई, बैंगलूर और चेन्नई में भी इसके कार्यालय हैं। अकादमी के बैंगलूर और कोलकाता में दो अनुवाद केन्द्र भी हैं। मौखिक और जनजातीय साहित्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शिलांग में अकादमी का परियोजना कार्यालय स्थित है तथा दिल्ली में भारतीय साहित्य का अभिलेखागार है। नई दिल्ली में ही अकादमी का अनूठा बहुभाषीय पुस्तकालय भी है। जिसके क्षेत्रीय कार्यालय बैंगलूर और कोलकाता में हैं। इनमें 25 से ज़्यादा भाषाओं की क़रीब डेढ़ लाख पुस्तकों का संग्रह है।

साहित्य अकादमी भारत की एक प्रमुख संस्था है जिसका मुख्य उद्देश्य देश की विभिन्न भाषाओं और साहित्य को बढ़ावा देना है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों द्वारा लिखित उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान करना। सर्वोत्तम साहित्यिक कृतियों का अनुवाद और प्रकाशन करना। भारतीय भाषाओं और साहित्य को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम और गतिविधियां आयोजित करना। युवा लेखकों और साहित्यकारों को प्रोत्साहित करना। साहित्य से जुड़े प्रकाशन, पुस्तकालयों और अनुसंधान केंद्रों को सहायता प्रदान करना।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ पर अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त चौबीस भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। यह पुस्तकालय सर्जनात्मक कृतियों, समालोचनात्मक पुस्तकों, अनूदित कृतियों, संदर्भ ग्रंथों तथा शब्दकोशों के समृद्ध संग्रह के लिए जाना जाता है।

साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले प्रमुख पुस्तकों के बारे में जानकारी: कविता/कहानी संग्रह: साहित्य अकादमी विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिखी गई। उत्कृष्ट कविता और कहानी संग्रहों का प्रकाशन करती है। इनमें साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेताओं की रचनाएं भी शामिल होती हैं। अनुवाद पुस्तकें: साहित्य अकादमी भारतीय भाषाओं की क्लासिक और समकालीन साहित्यिक कृतियों का अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं में

अनुवाद करके प्रकाशित करती है। इससे विभिन्न भाषाई समूहों के बीच साहित्यिक आदान-प्रदान होता है। साहित्यिक पत्रिकाएं: अकादमी 'समकालीन साहित्य' नामक एक त्रैमासिक पत्रिका भी प्रकाशित करती है जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं की नवीनतम साहित्यिक रचनाओं को शामिल किया जाता है। साहित्यिक इतिहास/निबंध: साहित्य अकादमी विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य के इतिहास और विकास पर ग्रंथों और निबंधों का प्रकाशन भी करती है। विशेष अंक: अकादमी महान साहित्यकारों की जयंतियों और विशेष अवसरों पर उनके जीवन और कृतित्व पर विशेष अंक भी प्रकाशित करती है। इन प्रकाशनों के अलावा साहित्य अकादमी भारत भर के सांस्कृतिक कार्यक्रमों और पुस्तक मेलों में भी हिस्सा लेती है।

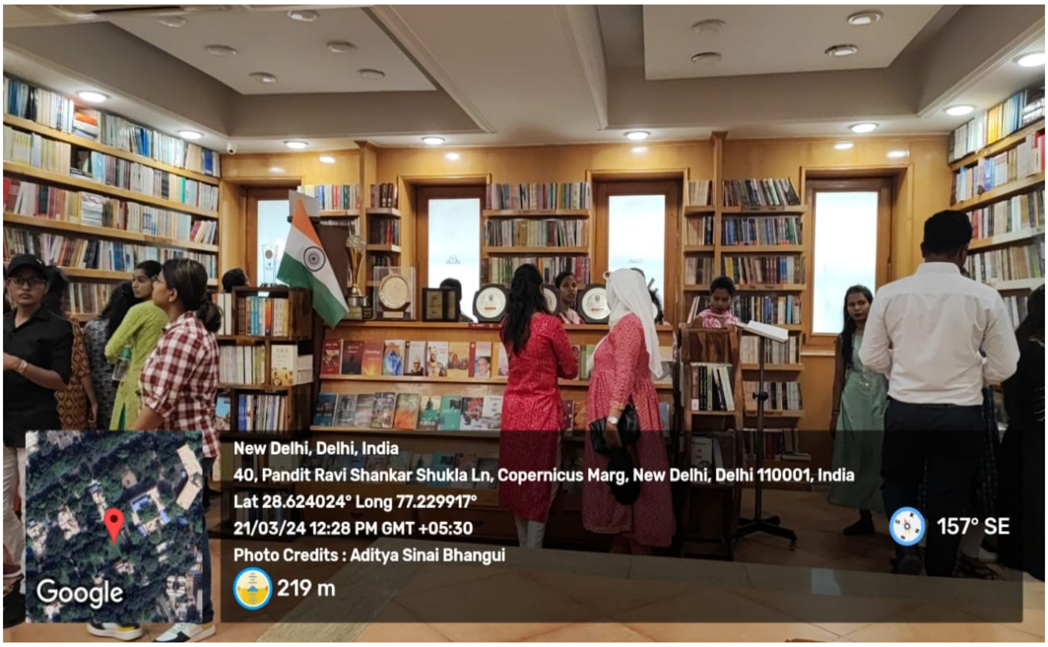

लोटस टेंपल

भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित लोटस टेम्पल अपनी अद्भुत वास्तुकला और अद्धितीय शिल्पकारी के लिए यहां के प्रमुख आर्कषण केन्द्रों में से एक है।

इस मंदिर को भारतीय उपमहाद्धीप का मदर टेम्पल भी कहा जाता है। वहीं यह भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से भी एक है। दुनिया के कोने-कोने से पर्यटक इस मंदिर की खूबसूरती को देखने आते हैं। कमल के फूल के आकार में बना यह लोटस टेम्पल अपनी खूबसूरती के लिए बहुत सारे आर्किटेक्चरल अवॉर्ड से भी नवाजा जा चुका है।

साल 1986 में बने इस खूबसूरत टैम्पल के दर्शन करने के लिए किसी भी धर्म का व्यक्ति आ सकता है। यह मंदिर सुख, शांति और पवित्रता का प्रतीक भी माना जाता है। आपको बता दें कि लोटस टेम्पल को कनाडा के पर्शियन आर्किटेक्ट फरिबोर्ज सहबा ने डिजाइन किया था। वहीं इस मंदिर के परिसर में बना सुंदर फूलों का बगीचा भी है।

कमल मंदिर एक बहाई उपासना मंदिर है, जहां न कोई भगवान की प्रतिमा रखी गई है, और ना ही इधर किसी तरह की पूजा-अर्चना होती है, यहां लोग सिर्फ अपनी मन की शांति के लिए आते हैं और घंटों बैठकर यहां की खूबसूरती का आनंद लेते हैं। आपको बता दें कि लोटस टेम्पल को विश्व के 7 बहाई मंदिरों में से आखिरी मंदिर माना जाता है।

बहाई धर्म की आस्था से जुड़ा राजधानी दिल्ली के नेहरू प्लेस के पास स्थित लोटस टेम्पल का निर्माण बहाई धर्म के संस्थापक बहा उल्लाह ने करवाया था। आपको बता दें कि कमल के फूल के आकार की तरह बने इस लोटस टेम्पल का निर्माण काम नवंबर, 1986 में पूरा हुआ था, जिसका उद्घाटन 24 दिसंबर, 1986 को किया गया था, जबकि आम पब्लिक के लिए इस मंदिर को नए साल पर 1 जनवरी 1987 को खोला गया है।

लोटस टेम्पल के निर्माण में करीब 10 साल का लंबा समय लग गया था। लोटस टेम्पल बहाई धर्म के दुनिया में स्थित 7 प्रमुख मंदिरों में से एक है। इसके अलावा बहाई धर्म के अन्य मंदिर कम्पाला, सिडनी, इल्लिनॉइस, फ्रैंकपर्ट, विलमेट, पनामा, अपिया में हैं। लोटस टेम्पल अपने अद्धितीय वास्तुशिल्प और अनूठी डिजाइन के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। इस मंदिर को कनाडा में रहने वाले एक मशहूर पर्शियन वास्तुकार फरीबर्ज सहबा ने तैयार किया था। यह मंदिर भारत की सर्वधर्म समभाव की अनूठी संस्कृति को दर्शाता है, यह हर धर्म से जुड़े लोगों के लिए खुला हुआ है। यह भारत की आधुनिक वास्तुकला का एक नायाब नमूना है।

एकता और शांति का प्रतीक माने जाने वाला दिल्ली का लोटस टेम्पल आधा खिला हुआ कमल के फूल की डिजाइन के रुप में बना हुआ है, जो कि देखने में बेहद आर्कषक और मनोरम लगता है। इसकी खूबसूरती की वजह से ही यह दिल्ली के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। इस टेंपल की वास्तुकला को आधुनिक वास्तुशिल्प का उत्कृष्ट नमूना भी माना जाता है। वहीं कमल की आकृति में इसे लोटस टेंपल कहा जाता है।

पार्शियन आर्किटेक्ट फरबर्ज सहबा द्धारा बनाए बहाई धर्म के इस प्रसिद्ध मंदिर में सभी धर्म के लोग शांति और सुकून प्राप्त करने के लिए यहां आते हैं। आपको बता दें कि भारतीय सुंदरता की मिसाल माने जाने वाले करीब 26 एकड़ के क्षेत्रफल में बना यह मंदिर आधे खिले हुए कमल के फूल की आकृति में संगममरमर की 27 पंखुड़ियों से बनाया गया है, जो कि 3 चक्रों में व्यवस्थित है और यह चारों तरफ से बेहद आर्कषित 9 दरवाजों से घिरा हुआ है।

आर्क के आकार में बने यह दरवाजे कोणाकार, बेलनाकार और सादे आकार में बने हुए हैं, जिसकी आर्कषक बनावट पर्यटकों का ध्यान अपनी तरफ खींचती है। इस मंदिर की लंबाई करीब 40 मीटर है। इस मंदिर के 9 कोने हैं, वहीं 9 के सबसे बड़े अंक होने की वजह से ऐसी मान्यता है कि, यह कमल मंदिर एकता, अखंडता और विस्तार को प्रदर्शित करता है।

इस मंदिर के मध्य में एक बेहद भव्य हॉल बनाया गया है, जहां करीब ढाई हजार लोग एक साथ बैठकर प्रार्थना कर सकते हैं और मानिसक सुकून, शांति एवं सादगी प्राप्त कर सकते हैं। इस मंदिर में निर्धारित समय पर होने वाली प्रार्थना में हिस्सा लेने के लिए हजारों लोग रोजाना यहां आते हैं। लोटस टेम्पल में हर घंटे में 5 मिनट के लिए विशेष प्रार्थना आयोजित की जाती है।

इस मंदिर में ऊंची आवाज में या फिर जोर-जोर से प्रार्थना करने की अनुमति नहीं है। इसके अलावा किसी भी तरह की संगीत के वाद्य यंत्रों को भी यहां बजाने की इजाजत नहीं है। इस मंदिर के परिसर में बेहद सुंदर बड़े-बड़े घास के मैदान, सफेद विशाल भवन भी है। इसके अलावा मंदिर में साल 2003 में एक सूचना केन्द्र भी स्थापित किया गया था, इस सूचना केन्द्र में इस मंदिर का मुख्य सभागार है, जहां करीब 400 लोग एक साथ बैठकर शांत मन से प्रार्थना कर सकते हैं।

मंदिर में स्थित सूचना केन्द्र, लोटस टेम्पल के निर्माण और इसके इतिहास के साथ-साथ बहाई धर्म और उसके सिद्धान्तों के बारे में जानकारी देता है। इसके साथ ही भारत के इस प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक लोटस टेम्पल में दो छोटे-छोटे सभागार भी हैं, जिसमें करीब

70 सीटें हैं। लोटस टेम्पल में एक ऑडियो विज़ुअल रूम और लाइब्रेरी भी है, जहां पर्यटकों के लिए कई धार्मिक पुस्तकें भी रखी गई है। इस मंदिर में किसी भी देवता की कोई प्रतिमा मौजूद नहीं है, और न ही ईधर आज तक किसी तरह का पूजा और अनुष्ठान किया गया है।

यह सभी धर्म के लोगों के लिए खुला हुआ है। यह मंदिर भारत की अनेकता एवं एकता के सिद्धांत को प्रदर्शित करता है। इस मंदिर की सुंदर बनावट की वजह से इसे 20वीं सदी का ताजमहल भी कहा जाता है। वहीं दुनिया के 7 आश्चर्यों में एक ताजमहल के बाद लोटस टेम्पल एक प्रमुख पर्यटन और दर्शनीय स्थल है। अपनी अनूठी वास्तुशिल्प के लिए प्रसिद्ध इस मंदिर के बीचों-बीच एक तालाब भी है, जिस पर देखने पर ऐसा लगता है कि मानों पानी में कमल का फूल तैर रहा हो।

कमल मंदिर की खूबसूरती को बढ़ा रहे मार्बल पत्थर को ग्रीस से मंगवाया गया था। वहीं इस मंदिर के निर्माण के लिए इस्तेमाल किए गए पत्थरों को लेकर कई इतिहासकारों का यह भी कहना है कि इस मंदिर की जटिल डिजाइन की वजह से इस मंदिर को बनाने में करीब 10 हजार अलग-अलग आकार के संगमरमर के पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है।

दिल्ली में स्थित लोटस टेम्पल को बहाई समुदाय के महत्वपूर्ण धार्मिक केन्द्रों में से एक माना जाता है। लोटस टेम्पल, विश्व के सात बहाई केन्द्रों में से अंतिम एवं एशिया महाद्धीप का इकलौता बहाई केन्द्र हैं। बहाई धर्म के अन्य 6 केंद्र फ्रैंकफर्ट, पनामा शहर, सिडनी, कंपाला, वेस्ट समोआ, इल्लिनॉइस में स्थित है।

लोटस टेम्पल से बहाई समुदाय के लोगों की गहरी आस्था जुड़ी हुई है, हालांकि, इस मंदिर में किसी भी तरह की मूर्ति पूजा पर रोक है, यहां सभी धर्मों के लोग लोग मन की शांति और सुकून प्राप्त करने के लिए आते हैं। आपको बता दें कि बहाई पंथ सन् 1844 में ईरान में बहाउल्लाह द्धारा स्थापित किया गया एक नवीनतम और स्वतंत्र धर्म माना जाता है, जो कि एकता और अखंडता पर जोर देता है।

बहाई धर्म के मुताबिक विश्व के सभी मानव धर्मों का एक ही मूल है। बहाई धर्म का पालन करने वाले लोग इसके संस्थापक बहाउल्लाह को मुहम्मद, बुद्ध, कृष्ण, ईसा मसीह, आदि का अवतार और उनकी वापसी मानते हैं। एकीकरण पर जोर देने वाले बहाई धर्म के अनुयायी दुनिया के कोने-कोने में इसका प्रचार-प्रसार करने में जुटे हुए हैं। मंदिर को कमल के फूल के आकार देने का यह एकमात्र उद्देश्य है कि कमल सभी धर्मों के लोगों के लिए पवित्र और पूजन्य है, इसलिए यहां सभी धर्मों के लोग मन की शांति प्राप्त करने के लिए आते हैं।

हुमायूँ का मक़बरा

भारत में मुगल वास्तुकला का एक खूबसूरत उदाहरण, दिल्ली में हुमायूं का मकबरा, 16वीं शताब्दी में बनाया गया था और हर साल लाखों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक इसकी ओर आकर्षित होते हैं। स्मारक में मुगल सम्राट हुमायूं का मकबरा है और खूबसूरती से सदियों पुराने आकर्षण और सुंदरता को समेटे हुए है। हमीदा बानो बेगम के आदेश पर निर्मित, हुमायूँ के मकबरे की वास्तुकला ताजमहल जैसी ही है। लेकिन आम धारणा के अलावा, हुमायूं का मकबरा हुमायूं द्वारा नहीं बनाया गया था, बल्कि उनकी पत्नी हमीदा बानो बेगम ने अपने पति के प्रति प्यार के संकेत के रूप में बनवाया था।

इस इमारत का मुख्य कक्ष गुम्बददार एवं दुगुनी ऊँचाई का एक मंजिला है और इसमें गुम्बद के नीचे एकदम मध्य में आठ किनारे वाले एक जालीदार घेरे में द्वितीय मुग़ल सम्राट हुमायूँ की क़ब्र बनी है। हुमायूँ की क़ब्र इस इमारत की मुख्य क़ब्र है। इस इमारत में मुख्य केन्द्रीय कक्ष सहित नौ वर्गाकार कक्ष बने हैं। इनमें बीच में बने मुख्य कक्ष को घेरे हुए शेष आठ दुमंजिले कक्ष बीच में खुलते हैं। ठीक नीचे आंतरिक कक्ष में सम्राट हुमायूँ की असली समाधि बनी है, जिसका बाहर से रास्ता जाता है। इस पूरी इमारत में पीट्रा ड्यूरा नामक संगमरमर की पच्चीकारी का प्रयोग है और इस प्रकार के क़ब्र के नियोजन जो मुग़ल साम्राज्य के बाद के मक़बरों, जैसे ताजमहल आदि में खूब प्रयोग हुए हैं, यह भारतीय-इस्लामिक स्थापत्यकला का महत्त्वपूर्ण अंग हैं,

पश्चिम में मक्का की ओर संगमरमर की जालीदार घेरे के ठीक ऊपर इमारत के मुख्य कक्ष में मेहराब भी बना है। प्रधान कक्ष के चार कोणों पर चार अष्टकोणीय कमरे हैं, जो मेहराबदार दीर्घा से जुड़े हैं। प्रधान कक्ष की भुजाओं के बीच-बीच में चार अन्य कक्ष भी बने हैं। ये आठ कमरे मुख्य क़ब्र की परिक्रमा बनाते हैं, जैसी सूफीवाद और कई अन्य मुग़ल मक़बरों में दिखती है, साथ ही इस्लाम धर्म में जन्नत का संकेत भी करते हैं। यहाँ आमतौर पर प्रवेशद्वारों पर खुदे क़ुरआन के सूरा 24 के बजाय सूरा- अन-नूर की एक रेखा बनी है, जिसके द्वारा प्रकाश किबला (मक्का की दिशा) से अंदर प्रवेश करता है। इस प्रकार सम्राट का स्तर उनके विरोधियों और प्रतिद्वंदियों से ऊँचा देवत्व के निकट हो जाता है। इन प्रत्येक कमरों के साथ 8-8 कमरे और बने हैं, जो कुल मिलाकर 124 कक्षीय योजना का अंग हैं। मुग़ल नवाबों और दरबारियों की क़ब्रों को इन छोटे कमरों में समय-समय पर बनाया हुआ है। हुमायूं का मकबरा, जिसे "मुगल का छात्रावास" भी कहा जाता है, एक या दो नहीं बल्कि एक ही परिसर के अंदर 100 मकबरे हैं। हुमायूं के मकबरों पर कुछ भी न लिखे रहने की वजह से, मकबरा किसका है ये पहचान पाना थोड़ा मुश्किल है। मुगल सम्राट हुमायूं की कब्र मकबरे के केंद्रीय मुर्दाघर के अंदर स्थित है और बगल के कमरों से घिरी हुई है जिसमें उनकी दो पत्नियों और बाद के मुगलों की कब्रें हैं।

हुमायूं के मकबरे का बाहरी नजारा बेहद खूबसूरत है, क्योंकि यह भारत में निर्मित पहला बागों वाला मकबरा है। फारसी द्वारा निर्मित, इसकी प्राकृतिक सुंदरता लोगों को भारत के प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में से एक की सैर करने के लिए मंत्रमुग्ध कर सकती है। हुमायूं के मकबरे के बारे में एक और दिलचस्प तथ्य यह है कि इसके निर्माण में फारसी को भी शामिल किया गया था। हुमायूं का मकबरा असल में पत्नी हमीदा बानो बेगम ने अपने पति, मुगल सम्राट हुमायूं के लिए बनवाया था। यह उनके द्वारा अपने पति की मृत्यु के बाद उनकी स्मृति में बनवाया गया था। सम्राट हुमायूं की मृत्यु के बाद, उन्होंने फ़ारसी वास्तुकारों को बुलाया और उनसे कहा कि वे कुछ इतना शानदार बनाएँ कि दुनिया इसे आने वाले युगों तक याद रखे। हुमायूं के बेटे अकबर ने यह जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले ली और अपनी पत्नी और बेटे द्वारा हुमायूं के स्मरण के प्रतीक के रूप में मकबरे का निर्माण करवाया गया।

हुमायूं के मकबरे के अंदरूनी भाग समृद्ध और सुरुचिपूर्ण कालीनों और शामियाना से बने हुए हैं जो स्मारक को एक भव्य और शाही रूप प्रदान करते हैं। स्मारक के अंदर टॉप पर एक छोटा सा तम्बू बना हुआ है, जहां आप हुमायूं की तलवार, जूते और पगड़ी को उनकी स्मृति के प्रतीक के रूप में देख सकते हैं। दिलचस्प बात यह है कि हुमायूं के मकबरे ने मुगल वास्तुकला में चार-चौथाई उद्यान की अवधारणा को पेश किया है।

हुमायूं के मकबरे के ऊपर स्थित गुंबद 42.5 मीटर लंबा, जहां आप सीढ़ियों के माध्यम से जा सकते हैं। स्मारक की जहां से शुरुआत होती है वहा से से शुरू होने वाले दो प्लेटफार्मों को अलग करने के लिए सीढ़ियों का निर्माण किया गया है। हुमायूं के मकबरे का डिजाइन और वास्तुकला आपको निश्चित रूप से बिल्कुल भी मिस नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इसके प्लेटफॉर्म एक दूसरे के ऊपर आपस में जुड़े हुए हैं जो इसे देखने लायक बनाते हैं। हुमायूं का मकबरा लगभग 8 वर्षों में बनकर तैयार हुआ था और इसके निर्माण में लगभग 1.5 मिलियन रुपये खर्च किए गए थे। एक फारसी वास्तुकार, मिराक मिर्जा घियाथ द्वारा डिजाइन किया गया, मकबरा आठ-पक्ष कक्षों की अवधारणा पर बनाया गया है जो इस्लामी स्वर्ग विचारधारा का प्रतीक है। इसके निर्माण के तुरंत बाद, इसने मुगल वास्तुकला के विस्तार में एक ऐतिहासिक स्मारक का दर्जा प्राप्त किया।

हुमायूँ के मक़बरे के मुख्य पश्चिमी प्रवेशद्वार के रास्ते में प्रमुख स्मारक ईसा ख़ाँ नियाजी का मक़बरा है, जो मुख्य मक़बरे से भी 20 वर्ष पूर्व 1547 में बना था। ईसा ख़ाँ नियाजी मुग़लों के विरुद्ध लड़ने वाला सूर वंश के शासक शेरशाह सूरी के दरबार का एक अफ़ग़ान नवाब था। यह मक़बरा ईसा ख़ाँ के जीवनकाल में ही बना था और उसके बाद उसके पूरे परिवार के लिये ही काम आया।

इस मक़बरे में एक तीन आंगन चौड़ी लाल बलुआ पत्थर की मस्जिद स्थित है।
हैरू बू हलीमा का मक़बरा और उसके बाग़ चहारदीवारी के बाहर स्थित हैं। ये मक़बरा अब ध्वंस हो चुका है और इसके अवशेषों से ज्ञात होता है कि ये केन्द्र में स्थित नहीं था। इससे आभास होता है कि संभवतः ये बाद में जोड़ा गया होगा। इस परिसर में अरब सराय स्थित है, जिसे हमीदा बेगम ने मुख्य मक़बरे के निर्माण में लगे कारीग़रों के लिये बनवाया था। इस परिसर में ही अफ़सरवाला मक़बरा भी बना है, जो अकबर के एक नवाब के लिये बना था। इसके साथ ही इसकी मस्जिद भी बनी है। नीला बुर्ज नामक मक़बरा पूरे परिसर के बाहर स्थित है । इस मक़बरे का नाम इसके गुम्बद के ऊपर लगी नीली ग्लेज्ड टाइलों के कारण पड़ा है।

बिरला मंदिर

कनॉट प्लेस में स्थित बिरला मंदिर राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक है, जिसे लक्ष्मी नारायण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी (समृद्धि की देवी) को समर्पित है। मंदिर में विराजित माता लक्ष्मी और विष्णु भगवान की मूर्ति का अलौकिक सौंदर्य देखते ही बनता है।

दिल्ली में स्थित इस भव्य मंदिर का निर्माण मूल रूप में सन 1622 में वीर सिंह देव द्वारा करवाया गया था। बाद में साल 1793 में पृथ्वी सिंह द्वारा जीर्णोद्धार (मरम्मत) करवाई थी। सन 1938 में देश के एक बड़े औद्योगिक परिवार बिड़ला समूह के सदस्य जी. डी. बिरला द्वारा मंदिर का विस्तार और पुनरुत्थान कराया गया था। मंदिर का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा इस शर्त पर किया गया था कि मंदिर के अन्दर सभी जाति के लोगों को प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। कनॉट प्लेस के पश्चिम भाग में स्थित यह मंदिर दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक है और एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण है।

मंदिर के बाहरी भाग को सफेद संगमरमर और लाल बलुआ पत्थर से मिलकर बना गया है, जो मुगल शैली की याद दिलाता है।
इसके परिसर को बनाने में मकराना, आगरा, कोटा और जैसलमेर के कोटा पत्थर का उपयोग किया गया था। मुख्य मंदिर में भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी की मूर्तियाँ हैं भगवान शिव, भगवान नारायण, भगवान गणेश और हनुमान को समर्पित अन्य छोटे मंदिर हैं इसके अतिरिक्त भगवान बुद्ध को समर्पित एक मंदिर भी है।

मंदिर का मुख पूर्व की ओर है और यह एक ऊँचे पठार पर स्थित है। मंदिर के अन्दर 3 ओर दो मंजिला बरामदे हैं और पिछले भाग में बगीचे और फव्वारे बने हैं। मंदिर के उत्तर में स्थित गीता भवन भगवान कृष्ण को समर्पित है यह मंदिर लगभग 7.5 एकड़ क्षेत्र में फैला है। जिसमे कई मंदिर, बड़े गार्डन और गीता भवन भी सम्मिलित है। मंदिर में स्थापित मूर्तियों की नक्काशी आचार्य विश्वनाथ शास्त्री की अध्यक्षता में बनारस के लगभग 100 कुशल कारीगरों द्वारा की गई थी।

मंदिर के मुख्य गर्भगृह के ऊपर मंदिर का सबसे ऊंचा शिखर लगभग 160 फीट ऊंचा है। मंदिर में मौजूद मूर्तियों को जयपुर से लाए गए संगमरमर द्वारा निर्मित किया गया था। मंदिर के गलियारे की सभी दीवारों पर देश के प्रसिद्ध ऋषियों, मुनियों, महापुरूषों एवं पराक्रमी राजाओं के जीवन-चरित चित्रित किए गये हैं।

मंदिर की दायीं ओर एक गीता भवन भी बना हुआ है, जिसमें भगवान् श्री कृष्ण की एक बड़ी मूर्ति स्थापित है और भगवान् कृष्ण द्वारा गीता मे दिए उपदशों को दीवारों पर बनी कलाकृतियों द्वारा दर्शाया गया हैं। इस मंदिर का निर्माण हिन्दू उड़िया वास्तुशैली में किया गया हैं। लक्ष्मी नारायण मंदिर का सबसे नज़दीकी मेट्रो स्टेशन आर.के.आश्रम मार्ग है।

मंदिर को रामनवमी, दिवाली एवं कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्वों के अवसर पर खूब सजाया जाता है। त्यौहार के दिनों में लाखों की संख्या में नर-नारी व बच्चे इस मंदिर को देखने आते हैं, जिसके कारण मंदिर में पैर रखने की भी जगह नहीं मिलती है।

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना 1922 में ब्रिटिश भारत के तत्कालीन केंद्रीय विधान सभा के एक अधिनियम द्वारा एकात्मक, शिक्षण और आवासीय विश्वविद्यालय के रूप में की गई थी। हरि सिंह गौर ने 1922 से 1926 तक विश्वविद्यालय के पहले कुलपति के रूप में कार्य किया। उस समय दिल्ली में चार कॉलेज मौजूद थे: सेंट स्टीफन कॉलेज की स्थापना 1818 में, हिंदू कॉलेज की स्थापना 1899 में, ज़ाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज (तब दिल्ली कॉलेज के रूप में जाना जाता था), 1792 में स्थापित और रामजस कॉलेज की स्थापना 1917 में हुई, जिनको बाद में मान्यता विश्वविद्यालय ने प्रदान की। विश्वविद्यालय में शुरू में दो संकाय (कला और विज्ञान) और लगभग 750 छात्र थे।

ब्रिटिश भारत में राजधानी 1911 में कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित कर दी गई थी। विकराल लॉज एस्टेट अक्टूबर 1933 तक भारत के वायसराय का निवास स्थान बन गया, जब इसे दिल्ली विश्वविद्यालय को दिया गया। तब से, इसमें कुलपति और अन्य कार्यालयों के कार्यालय को रखा है।

दिल्ली विश्वविद्यालय अपने इन 100 वर्षों में देश के 100 वर्षों का इतिहास भी समेट रखा है। विशेष रूप से यदि इसके आरंभिक 25 वर्षों की बात करें तो इसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को बहुत करीब से देखा है। आजादी की लड़ाई में ब्रिटिश सत्ता से बेखौफ भिड़ जाने वाले और सत्ता प्राण गंवाने वाले कई क्रांतिकारी विश्वविद्यालय के विभिन्न कालेजों के छात्र रहे थे।

अंग्रेजों के खिलाफ छात्रों द्वारा किए गए कई विरोध और हड़तालों के आयोजन का यह विश्वविद्यालय साक्षी रहा है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक बहुत ही महत्वपूर्ण नेता लाला हरदयाल, जिन्होंने गदर पार्टी की स्थापना में केंद्रीय भूमिका निभाई थी, वे स्टीफन कालेज के छात्र थे। होमरूल आंदोलन के दौरान भी यहां छात्रों ने सक्रियता दिखाई थी और बड़े स्तर पर विरोध प्रदर्शन और हड़ताल आयोजित की थीं। दिल्ली षड्यंत्र मामले की सुनवाई कर रही अदालत वाइसरीगल लाज (वर्तमान कुलपति कार्यालय) में आयोजित की गई थी।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान, सेंट स्टीफंस कालेज के छात्रों ने कालेज की मुख्य इमारत के ऊपर राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जो वहां तीन-चार दिनों तक रहा, इसी क्रम में 26 जनवरी 1936 को दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र संघ ने 'स्वतंत्रता दिवस' भी मनाया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जब दिल्ली के कश्मीरी गेट के पास सेंट स्टीफंस और हिंदू कालेजों के सामने त्रिकोणीय पार्क में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया, तो इस विश्वविद्यालय के छात्र भी प्रदर्शन में शामिल हुए थे।

यहां तक कि महात्मा गांधी ने भी स्टीफेंस कालेज का दौरा किया और उसे संबोधित किया और वहां 'असहयोग प्रस्ताव का मसौदा तैयार किया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय का अपना एक शिक्षक संघ है जिसे दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (डूटा) के नाम से जाना जाता है। डूटा की स्थापना वर्ष 1957 में हुई थी, जबकि इसके अध्यक्ष पद का चुनाव 1967 से शुरू हुआ था।

देशभर के केंद्रीय विश्वविद्यालयों में जब भी शिक्षक हितों की बात आती है, सभी जगह के शिक्षक डूटा की तरफ देखते हैं। केवल शिक्षकों और छात्रों के हित के लिए ही नहीं बल्कि देशहित के लिए भी यहां के शिक्षक नेता कई बार जेल गए हैं। दरअसल शिक्षक संघ, विश्वविद्यालय और सत्ता के बीच एक सेतु का कार्य करता है।

एक संस्थान के लिए 100 वर्ष उसका बाल्य काल ही होता है। समय के साथ जब हजारों छात्र और शिक्षक अपने-अपने हिस्से की ईंटें जोड़ते हैं, नींव तैयार करते हैं...और तब जाकर शिक्षा के क्षेत्र में एक समर्थ संस्थान तैयार होता है, दिल्ली विश्वविद्यालय ऐसे ही संस्थान का प्रतीक है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के दूरदर्शिता और मिशन वक्तव्य पूरी मेहनत के साथ हमारे लक्ष्यों का पीछा करने और उन्हें हासिल करने के हमारे संकल्प को दर्शाते हैं। यह हमारी प्रतिबद्धता है कि हम अपने छात्रों को सर्वोत्तम उच्च शिक्षा प्रदान करने में सबसे आगे रहें और विश्वविद्यालय समुदाय और व्यापक समुदाय के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करके हमारे देश और पूरी दुनिया के उज्ज्वल और टिकाऊ भविष्य को आकार देने में उत्प्रेरक के रूप में कार्य करें।

एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय बनें, जो शिक्षण, अनुसंधान और क्षमता-निर्माण में उत्कृष्टता के लिए पहचानी जाए; छात्रों को उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना, उनकी प्रतिभा को निखारना, बौद्धिक विकास को बढ़ावा देना और उनके व्यक्तिगत विकास को आकार प्रदान करना; दिल्ली विश्वविद्यालय के आदर्श वाक्य "निष्ठा धृति: सत्यम्" के अनुरूप सत्य की खोज में समर्पित और दृढ़ रहें और पूर्ण-विकसित, बहु-कुशल और सामाजिक रूप से जिम्मेदार वैश्विक नागरिकों के निर्माण के माध्यम से मानवता की सेवा करें।
बहुआयामी शिक्षा और स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक समुदायों के साथ निरंतर जुड़ाव के माध्यम से छात्रों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना और 'वसुधैव कुटुम्बकम' के हमारे सांस्कृतिक आदर्श के अनुरूप दुनिया भर से निरंतर आने वाले शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करना।

कला संकाय
दिल्ली विश्वविद्यालय
FACULTY OF ARTS
UNIVERSITY OF DELHI
GPS Map Camera
Delhi, Delhi, India
Delhi University Staff Flats, 29/31, Chhatra Marg, Art Faculty, University Enclave, Delhi, 110007, India
Lat 28.688893°
Long 77.20836°
22/03/24 11:48 AM GMT +05:30
Google

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

वर्ष 1969 में 'जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय' की स्थापना देश की सामाजिक ज़रूरतों को समझने और समाज के हर तबके को श्रेष्ठ अकादमिक शिक्षा मुहैया कराने के मकसद से की गई थी। इस संस्थान को माकपा महासचिव प्रकाश करात, माकपा पोलित ब्यूरो के सदस्य सीताराम यूचुरी, अमेरिका स्थित 'मैसाच्यूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी' में फ़ोर्ड फ़ाउण्डेशन के प्रोफ़ेसर अभिजित बनर्जी और दिल्ली स्थित 'विदेशी सेवा संस्थान' के डीन ललित मानसिंह सरीखे देश के कुछ प्रमुख राजनीतिज्ञों, नौकरशाहों, शिक्षाविदों, पत्रकारों और वैज्ञानिकों को उत्पन्न करने का श्रेय हासिल है।

जे.एन.यू. मूलत: शोध विश्वविद्यालय है, जो गुणवत्तायुक्त अकादमिक शिक्षक सामने लाने के लिए प्रसिद्ध है। इसका श्रेय अध्यापन और अनुसंधान के बीच सहजीवी सम्बन्धों को दिया जा सकता है। इस प्रमुख विश्वविद्यालय के 10 स्कूलों और तीन केन्द्रों के पोस्ट ग्रेजुएट, एम.फ़िल. और पी.एच.डी. कार्यक्रमों में 6,000 छात्र पंजीकृत हैं। इसके 'स्कूल ऑफ़ सोशल साइंसेज' (एसएसएस) ने 'नार्थ-ईस्ट इण्डिया स्टडीज कार्यक्रम' की भी शुरुआत की है। इस विश्वविद्यालय की 2012 से एक मीडिया कोर्स शुरू करने की भी योजना है।

विश्वविद्यालय ने अंग्रेज़ी भाषा में एक सेमेस्टर वाला एक फ़ाउण्डेशन कोर्स भी शुरू किया है। विश्वविद्यालय की ख़ास बात यह है कि उसे अपने कोर्स में बदलाव करने की आज़ादी है। सोपोरी के अनुसार- "फैकल्टी को उद्योग की ज़रूरतों के मुताबिक़ पाठ्यक्रम में थोड़ा-बहुत परिवर्तन करने की छूट है। शिक्षकों का हमारा अपना पैनल है, जो परिवर्तन को लेकर विचार करता है।" उसके बाद ही परिवर्तित पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। वे उस वर्ष सम्बन्धित क्षेत्र में हुए शोधों के अनुरूप पाठ्यक्रम में बदलाव कर सकते हैं। 2012 से विश्वविद्यालय में दाखिले की प्रक्रिया पूरी तरह से ऑनलाइन हो गई है। विश्वविद्यालय में शिक्षकों-छात्रों का अनुपात 1:30 है। शिक्षकों से आसानी से सम्पर्क किया जा सकता है और कई मामलों में तो शिक्षक-छात्र अनुपात 1:2 है। इसके अलावा लाइब्रेरी देर तक, कभी तो रात 12 बजे तक खुली रहती है। परीक्षा के दिनों में इसका बहुत लाभ होता है। सुरक्षा के मामले में यह परिसर निराश नहीं करता। खाने की जगहें देर तक खुली रहती हैं और विद्यार्थी पूरी आज़ादी से घूमते हैं। विश्वविद्यालय ने अपने सभी 18 छात्रावासों के लिए निजी सुरक्षा एजेंसियों की सेवाएँ ले रखी हैं। 6,000 से ज़्यादा विद्यार्थियों, जिनमें 29 देशों के 110 विदेशी छात्र भी शामिल हैं, की वजह से परिसर में सुरक्षा का पर्याप्त इंतजाम प्रशासन की पहली प्राथमिकता है। इसी साल लड़कियों का एक नया छात्रावास 'शिप्रा' खुल जायेगा, जिसकी क्षमता 500 छात्राओं की है।

अध्ययन, अनुसंधान और अपने संगठित जीवन के उदाहरण और प्रभाव द्वारा ज्ञान का प्रसार तथा अभिवृद्धि करना। उन सिद्धान्तों के विकास के लिए प्रयास करना, जिनके लिए जवाहरलाल नेहरू ने जीवन-पर्यंत काम किया। जैसे - राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, धर्म निरपेक्षता, जीवन की लोकतांत्रिक पद्धति, अन्तरराष्ट्रीय समझ और सामाजिक समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में मुख्यत: स्नातकोत्तर शिक्षा एवं अनुसंधान से संबंधित है। विश्वविद्यालय के 10 स्कूल हैं जिनके 36 अध्ययन केन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त, इसके तीन स्वतंत्र अध्ययन केन्द्र हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय 36 प्रतिभागी विश्वविद्यालयों के एम.एस-सी., जैव-प्रौद्योगिकी, एम.एस-सी., कृषि जैव-प्रौद्योगिकी, एम.वी.एस-सी. (एनिमल) जैव-प्रौद्योगिकी और एम.टेक. जैव-प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए संयुक्त जैव-प्रौद्योगिकी प्रवेश परीक्षा सफलतापूर्वक आयोजित कर रहा है। यह प्रवेश परीक्षा अखिल भारतीय स्तर पर विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए होने वाली परीक्षाओं के साथ आयोजित की जाती है।

जेएनयू छात्रसंघ के चुनाव भी छात्रों द्वारा ही करवाए जाते हैं. डिबेट से लेकर चुनावों के आयोजन का संचालन जेएनयू छात्रसंघ की चुनाव समिति के हाथ में होता है। इसमें जेएनयू प्रशासन की अहम भूमिका नहीं होती है। सभी सेंटर के छात्रों की एक चुनाव समिति गठित की जाती है। इसमें नियुक्त मुख्य चुनाव आयुक्त सहित 18 लोग होते हैं। इस बार इसमें मुख्य चुनाव आयुक्त स्नातकोत्तर द्वितीय वर्ष के छात्र हिमांशु कुलश्रेष्ठ को चुना गया है।

चुनाव के दौरान लिंगदोह समिति की सिफारिशों को लागू किया जाता है। नामांकन वापस लेने की अंतिम तिथि को अंतिम रूप से चुनाव लड़ रहे उम्मीदवारों की सूची जारी की जाती है। हालांकि छात्र लिंगदोह समिति के बजाय छात्रसंघ संविधान से चुनाव करवाने की मांग करते रहते हैं। उसके बाद वोटिंग से दो दिन पहले रात को डिबेट का आयोजन किया जाता है, जो कि बेहद खास होती है। जेएनयू में छात्रसंघ के चुनाव से दो दिन पहले विभिन्न पार्टी के अध्यक्ष पद के प्रत्याशी एक मंच पर जुटते हैं। इसका आयोजन भी जेएनयू छात्रसंघ की चुनाव समिति के हाथ में होता है।

यहां प्रत्याशी आगामी चुनाव के लिए अपने विचार और मुद्दे रखते हैं। इस बहस में मुख्य तौर पर कैम्पस के तमाम मुद्दों मसलन हॉस्टल, मेस, लाइब्रेरी, दिव्यांग स्टूडेंट को सुविधा दिलाने पर किसी प्रत्याशी की राय, देश के हालिया राजनीति और वैश्विक राजनीति पर बहस की जाती है। साथ ही कैंपस में एक मशाल जुलूस भी होता है. यह जुलूस चुनाव समिति की अनुमति से निकाला जाता है। जुलूस में बड़ी संख्या में छात्र हाथों में मशाल लेकर ढपली की थाप पर गीत गाते और नारे लगाते कैंपस भर में जुलूस निकालते हैं। बता दें कि लिंगदोह

कमिटी की सिफारिश को जेएनयू छात्र समुदाय ने रिजेक्ट कर दिया था। इसके बाद दो साल तक यहां लिंगदोह के खिलाफ प्रदर्शन चला. मामला कोर्ट में गया और कुछ छूट के साथ जेएनयू में लिंगदोह कमिटी की सिफारिशों को लागू किया गया। यहां के छात्र जेएनयू छात्रसंघ के संविधान के हिसाब से चुनाव करवाने की मांग करते रहे हैं।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) की पुस्तकालय प्रणाली बहुत विस्तृत और समृद्ध है। यह कई पुस्तकालयों से मिलकर बना है जिनमें से प्रमुख हैं:
डॉ. भीखाजी कामा पुस्तकालय - यह केंद्रीय पुस्तकालय है जो विभिन्न विषयों पर पुस्तकों और पत्रिकाओं का विशाल संग्रह रखता है। प्रोफेसर जी.पी. दिवेकर पुस्तकालय - यह पुस्तकालय मानविकी और समाज विज्ञान संकाय के लिए है। लाइफ साइंसेज पुस्तकालय - जैव विज्ञान और जीव विज्ञान से संबंधित पुस्तकें और पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। कंप्यूटर और सूचना विज्ञान पुस्तकालय - कंप्यूटर साइंस, इलेक्ट्रॉनिक्स और संबंधित विषयों की पुस्तकें यहां मिलती हैं। विशेष संग्रह पुस्तकालय - यह पुस्तकालय दुर्लभ पुस्तकों, पुरानी पांडुलिपियों और अन्य महत्वपूर्ण सामग्रियों को संरक्षित करता है। JNU पुस्तकालय प्रणाली में लगभग 8 लाख पुस्तकें, 96,000 से अधिक बाउंड जर्नल मौजूद हैं और यह दुनिया भर की 15,000 से अधिक ई-पत्रिकाएं प्रदान करती है। यह छात्रों और शिक्षकों के लिए अध्ययन, शोध और विचार विमर्श का महत्वपूर्ण केंद्र है।

छात्र 24x7 पुस्तकालय प्रणाली का उपयोग कर सकते हैं लेकिन केवल प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों तक पहुंच के लिए। पुस्तकालय परिसर में प्रवेश केवल नियमित समय के दौरान ही संभव है। पुस्तकों को 14 दिनों की अवधि के लिए उधार लिया जा सकता है। नवीनीकरण की सुविधा भी उपलब्ध है। शोध छात्रों को लंबी अवधि के लिए पुस्तकें उधार लेने की अनुमति है। छात्रों को लैपटॉप, टैबलेट आदि लेकर आने की अनुमति है और पुस्तकालय परिसर में वाई-फाई की सुविधा भी उपलब्ध है। छात्रों को कक्षा समय और परीक्षा के दौरान पुस्तकालय बंद रहने के अलावा अन्य सभी समय पुस्तकालय का लाभ उठाने की सलाह दी जाती है।

कुतुब मीनार

कुतुब मीनार भारत में दिल्ली शहर के महरौली में ईंट से बनी, विश्व की सबसे ऊँची मीनार है। दिल्ली को भारत का दिल कहा जाता है, यहाँ पर कई प्राचीन इमारते और धरोहर स्थित है। इन पुरानी और खास इमारतों में से एक इमारत दिल्ली में स्थित है जिसका नाम है कुतुब मीनार, जो भारत और विश्व की सबसे ऊँची मीनार है। कुतुब मीनार भारत का सबसे खास और प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है।

कुतुब मीनार दिल्ली के दक्षिण इलाक़े में महरौली में है। यह इमारत हिंदू-मुग़ल इतिहास का एक बहुत खास हिस्सा है। कुतुब मीनार को लाल पत्थर और मार्बल से बनाया गया है। कुतुब मीनार की उंचाई 72.5 मीटर है और इसका डायमीटर 14.32 मीटर है। मीनार के अंदर कुल 379 सीढ़ियाँ है, जो कि गोलाई में बनी हुई है।

दिल्ली सल्तनत के संस्थापक कुतुब-उद-दिन ऐबक ने ईस्वी सन् 1200 में कुतुब मीनार का निर्माण करवाना शुरू किया था। इसके बाद 1220 में ऐबक उत्तराधिकारी और पोते इल्तुमिश ने इस मीनार में तीन मंजिल और बनवा दी थी। इसके बाद 1369 में सबसे उपर वाली मंजिल बिजली कड़कने की वजह पूरी तरह से टूट कर गिर गई।

इसके बाद फिरोज शाह तुग़लक़ ने एक बार फिर से कुतुब मीनार का निर्माण करवाना शुरू किया और वो हर साल 2 नई मंजिले बनवाते रहे। उन्होंने मार्बल और लाल पत्थर से इन मंजिलों को बनवाया था। कुतुबमीनार का निर्माण करवाना शुरू ऐबक ने किया था और पूरा करवाया इल्तुतमिश ने और 1369 में मीनार को दुर्घटना के कारण टूट जाने के बाद दुरुस्त करवाया फिरोजशाह तुगलक ने। कुतुब मीनार, एक 73 मीटर ऊंची मीनार है, जिसका निर्माण 1193 में कुतुब-उद-दीन ऐबक ने दिल्ली के अंतिम हिंदू राज्य की हार के तुरंत बाद करवाया था। इस इमारत में पांच अलग-अलग मंजिलें हैं, प्रत्येक को एक प्रोजेक्टिंग बालकनी और आधार पर 15 मीटर व्यास से शीर्ष पर सिर्फ 2.5 मीटर तक चिह्नित किया गया है।

कुतुब मीनार का नाम दिल्ली के सल्तनत कुतुब-उद-दिन ऐबक के नाम पर रखा गया है क्योंकि उन्ही ने 1199 AD में इसका निर्माण शुरू किया था। उस समय कुतुब-उद-दिन दिल्ली की सल्तनत के संस्थापक थे। बाद में उत्तराधिकार और पोते इल्तुमिश ने इसमें तीन मीनारों कर निर्माण और करवाया था ।

कुतुब मीनार को बनाने वाले इंसान का नाम बख्तियार काकी था जो कि एक सूफी संत था। बताया जाता है कि मीनार का नक्शा तुर्की की भारत में आने से पहले ही बनवाया गया था।

लेकिन सबसे अजीब बात तो ये है कि अब तक क़ुतुब मीनार के बारे में भारत के इतिहास में कुछ भी दस्तावेज नहीं मिले हैं।

बताया जाता है कि इस मीनार को राजपूत मीनार से प्रेरणा लेकर बनवाया गया था। क़ुतुब मीनार पर पारसी-अरेबिक और नागरी भाषाओँ में इसके इतिहास के बारे में कुछ अंश दिखाई देते हैं। लेकिन क़ुतुब मीनार के इतिहास को लेकर जो भी जानकारी हैं वो फ़िरोज़ शाह तुगलक (1351-89) और सिकंदर लोदी (1489-1517) से प्राप्त हुई है। आपको बता दें कि कुतुब मीनार के उत्तर में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद भी स्थापित है। कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण भी क़ुतुब-उद-दिन ऐबक ने 1192 में करवाया था। यह मस्जिद भारतीय उपमहाद्वीप की काफी पुरानी मस्जिद भी बताई जाती है। इस मस्जिद का निर्माण करवाने के बाद फिर इल्तुमिश (1210-35) और अला-उद-दिन ख़िलजी ने इस मस्जिद का विकास करवाया।

जब 1368 ईस्वी में बिजली गिरने की वजह से क़ुतुब मीनार का ऊपरी भाग टूट गया था लेकिन बाद में फ़िरोज़ शाह इसका फिर से निर्माण करवाया। इसका पुनर्निर्माण करवाने के साथ ही फिरोज शाह ने सफेद मार्बल से दो और मंजिलो को बनवाया। लेकिन इसके बाद 1505 में एक बड़े भूकम्प आने की वजह से क़ुतुब मीनार को भारी नुकसान हुआ और भूकंप में जो भी क्षति हुई थी उसकी मरम्मत सिकंदर लोधी ने करवाई।

लेकिन यह सिलसिला यहीं तक नहीं रुका इसके बाद 1 अगस्त 1903 को भी एक बड़ा भूकंप आया और एक बार फिर क़ुतुब मीनार को फिर से बड़ी क्षति पहुंची। लेकिन साल 1928 में ब्रिटिश इंडियन आर्मी के मेजर रोबर्ट स्मिथ ने इसकी मरम्मत करवाई इसके साथ ही उन्होंने क़ुतुब मीनार के ऊपर एक गुम्बद भी बनवा दिया, लेकिन बाद में पाकिस्तान गवर्नल जनरल लार्ड हार्डिंग ने इस गुम्बद को हटवा दिया था और उसे क़ुतुब मीनार के पूर्व में स्थापित करवा दिया।

उग्रसेन की बावली

उग्रसेन की बावली दिल्ली के मध्य में समय द्वारा छोड़ी गई एक स्मृति चिन्ह के रूप में खड़ी है। यह अलंकृत बावड़ी, जो कभी जलाशय हुआ करती थी, शानदार वास्तुकला और प्राचीन इंजीनियरिंग कौशल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सबसे पुराने स्मारकों में से एक और दिल्ली में सबसे अच्छी तरह से संरक्षित बावड़ी, अब यह राष्ट्रीय राजधानी में आने वाले पर्यटकों और फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए एक प्रमुख आकर्षण के रूप में कार्य करती है। इसकी खामोश दीवारें, वीरान सीढ़ियाँ और पत्थर की मेहराबें इसकी तत्कालीन भव्यता और गौरव की कहानी बयान करती हैं।

भव्य अग्रसेन की बावली का निर्माण कब और किसने करवाया, इसके बारे में कोई स्पष्ट ऐतिहासिक रिकॉर्ड नहीं है। हालाँकि, कई इतिहासकारों का सुझाव है कि इसका निर्माण महाभारत काल के दौरान किसी और ने नहीं बल्कि अग्रोहा के महान राजा महाराजा अग्रसेन ने किया था। बावड़ी या बावली का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया है। बाद में, 14 वीं शताब्दी में, इसका पुनर्निर्माण अग्रवाल समुदाय के लोगों द्वारा किया गया, जो महाराजा अग्रसेन के वंशज माने जाते हैं। बावड़ी की स्थापत्य विशेषताओं से यह भी संकेत मिलता है कि इसका पुनर्निर्माण दिल्ली पर तुगलक वंश (1321 -1414) या लोधी वंश (1451 से 1526) के शासनकाल के दौरान किया गया था।

उग्रसेन की बावली का निर्माण न केवल एक जलाशय के रूप में बल्कि एक सामुदायिक स्थान के रूप में भी किया गया था। ऐसा माना जाता है कि उस समय की महिलाएं इस कुएं पर इकट्ठा होती थीं और बावली का ठंडा माहौल उन्हें आराम करने और बाहर की चिलचिलाती गर्मी से दूर कुछ पल बिताने के लिए आदर्श स्थान प्रदान करता था। बावली के मेहराबदार कक्षों का उपयोग विभिन्न धार्मिक कार्यों और समारोहों के लिए भी किया जाता था

उग्रसेन की बावली, जिसकी लंबाई 60 मीटर और चौड़ाई 15 मीटर है, एक अनूठी और अलंकृत वास्तुकला शैली पेश करती है। पूरी संरचना विभिन्न प्रकार की चट्टानों और पत्थरों का उपयोग करके मलबे की चिनाई से बनाई गई है। बावड़ी का आयताकार आकार इसे दिल्ली की अन्य बावलियों से अलग बनाता है जो गोल जलाशय के रूप में बनाई गई थीं। यह तीन दृश्यमान स्तरों में फैला हुआ है, जिनमें से प्रत्येक को सुंदर और सममित मेहराबदार आलों से सजाया गया है जो दोनों तरफ पंक्तिबद्ध हैं। अग्रसेन की बावली दिल्ली की उन कुछ बावड़ियों में से एक है, जिनमें एकल-उड़ान सीढ़ियाँ हैं। 100 से अधिक सीढ़ियाँ

हैं जो आपको पानी के स्तर तक नीचे ले जाती हैं और जैसे-जैसे आप नीचे जाते हैं, आप तापमान में गिरावट का भी अनुभव कर सकते हैं।

इस बावड़ी के उत्तरी छोर पर एक गोलाकार कुआँ मौजूद है। इसका व्यास 8 मीटर है और यह वर्ष के अधिकांश समय सूखा रहता है। जब मानसून के मौसम में यह पानी से भर जाता है, तो जल स्तर लगभग 4 या 5 फीट की ऊंचाई तक बढ़ जाता है। कुआँ लोहे की ग्रिल से ढका रहता है जो किसी को जानबूझकर या गलती से पानी में गिरने से रोकता है। यह शाफ्ट द्वारा आयताकार मार्ग से भी जुड़ा हुआ है। जैसे-जैसे बावली का जल स्तर बढ़ता है, मार्ग भी पानी से भर जाता है।

अग्रसेन की बावली परिसर के दक्षिण-पश्चिम कोने पर एक छोटी मस्जिद मौजूद है। एक तिहरा मेहराबदार प्रवेश द्वार आपको मस्जिद तक ले जाता है। ये मेहराब चार बलुआ पत्थर के खंभों पर टिके हुए हैं, जिनमें से एक बहुत पहले ढह गया था। ये स्तंभ सजावटी संरचनाएं हैं जो पूरी संरचना की सुंदरता को बढ़ाते हैं।

राजघाट

दिल्ली में राजघाट राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को समर्पित एक शांत और सुंदर स्मारक है। गांधीजी की तरह, जो एक सरल लेकिन शक्तिशाली नेता थे, उनका स्मारक भी अपनी संरचना और डिजाइन में सादगी को दर्शाता है। यमुना नदी के तट पर स्थित, राजघाट वह स्थान है जहाँ हत्या के बाद उनका अंतिम संस्कार किया गया था। इसके अलावा, राजघाट क्षेत्र में देश के कई अन्य प्रसिद्ध नेताओं के दाह संस्कार स्थल यानी समाधि स्थल भी हैं।

मोहनदास करमचंद गांधी, जिन्हें महात्मा गांधी के नाम से भी जाना जाता है, की 30 जनवरी 1948 को हत्या कर दी गई और अगले दिन, उनके शरीर का यमुना के पास एक स्थान पर अंतिम संस्कार कर दिया गया। राजघाट वही स्थान है जहां गांधीजी को अग्नि के हवाले किया गया था और उनका अंतिम संस्कार किया गया था। गांधीजी के दर्शन और संयमित जीवन जीने के अभ्यास को ध्यान में रखते हुए इस स्थान पर एक साधारण स्मारक बनाया गया था।

मूल रूप से, राजघाट गेट एक पुराने गेट का नाम था जो दिल्ली के शाहजहानाबाद नामक शहर में मौजूद था। यह यमुना नदी के पश्चिमी तट पर राजघाट नामक स्थान पर खुलता था। बाद में, जिस क्षेत्र में गांधीजी का स्मारक बनाया गया, उसे राजघाट कहा जाने लगा।

पिछले कुछ वर्षों में, राजघाट क्षेत्र में कई उल्लेखनीय भारतीय नेताओं की समाधियाँ बनाई गईं, जिनमें देश के पूर्व राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री भी शामिल हैं। 2018 में निर्मित अटल बिहारी वाजपेयी की समाधि, राष्ट्रीय स्मृति स्थल, राजघाट क्षेत्र में नवीनतम जोड़ है।

राजघाट पर गांधीजी का स्मारक काले संगमरमर का उपयोग करके बनाया गया एक चौकोर मंच है। सादे ढांचे पर 'हे राम' शब्द अंकित हैं क्योंकि ये हत्यारे नेता द्वारा कहे गए अंतिम शब्द थे। संगमरमर के मंच के शीर्ष पर, कांच के फ्रेम में बंद एक शाश्वत लौ दिन और रात लगातार जलती रहती है। इस स्मारक का डिज़ाइन गांधी जी की सादा जीवन और उच्च विचार की नीति को ध्यान में रखते हुए वानु जी भूटा द्वारा किया गया था।

पत्थरों से बना एक फुटपाथ आपको स्मारक तक ले जाएगा, जो एक चारदीवारी के भीतर स्थित है। पत्थर के रास्ते के दोनों ओर हरे-भरे लॉन हैं। स्मारक का भूनिर्माण एलिक पर्सी-लैंकेस्टर द्वारा किया गया था, जो सरकार के तहत बागवानी संचालन के अधीक्षक के पद पर कब्जा करने वाले अंतिम ब्रिटिश नागरिक थे। भारत की।

स्मारक के चारों ओर एक सुंदर बगीचा भी है। बगीचे में कई लेबल वाले पेड़ हैं जिन्हें महारानी एलिजाबेथ द्वितीय, वियतनामी नेता हो ची मिन्ह, संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइजनहावर और कई अन्य लोगों सहित दुनिया भर के प्रसिद्ध गणमान्य व्यक्तियों द्वारा लगाया गया है।

राजघाट पर राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय या गांधी स्मारक संग्रहालय, गांधीजी के जीवन से संबंधित चित्रों, मूर्तियों, पुस्तकों, फिल्मों और अन्य यादगार वस्तुओं के संग्रह के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन और विचारधारा का जश्न मनाता है। संग्रहालय में गांधीजी के जीवन और कार्यों से संबंधित 35,000 से अधिक दस्तावेजों और पुस्तकों का एक समृद्ध संग्रह है, जिनमें से कुछ स्वयं नेता द्वारा लिखे गए हैं। इसमें उनकी कुछ निजी वस्तुओं, जैसे उनकी धोती, शॉल, चलने की छड़ें, उनके कुछ दांत और यहां तक कि उनकी हत्या के लिए इस्तेमाल की गई गोलियों में से एक के साथ चरखे या चरखे के 23 मॉडल भी प्रदर्शित किए गए हैं ।

उनका यह भी लक्ष्य है कि महात्मा गांधी के महत्वपूर्ण स्मृति चिन्हों को एकत्रित, संरक्षित एवं प्रदर्शित करें। वे गांधीवादी कार्य एवं समाज की बेहतरी के लिए स्वयंसेवकवाद को बढ़ावा देना चाहते हैं। महात्मा गांधी की शहादत के 21 वर्षों के बाद पूरी दुनिया ने 1969 में उनकी जन्म शताब्दी को उस प्रकार मनाना शुरू किया जो शांति के यात्री के अनुरूप है। उसके बाद महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी मनाने के लिए 36 एकड़ में फैला परिसर अस्तित्व में आया। भारत के 13 राज्यों एवं सात दूसरे देशों ने गांधी दर्शन अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का सृजन किया। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य गांधी के संदेश और आधुनिक विश्व की पृष्ठभूमि में सत्य एवं अहिंसा के सिद्धांत तथा जिस प्रकार इसने राष्ट्र के जीवन को तथा आधुनिक विश्व को प्रभावित किया है, उसकी व्याख्या करना है। आज गांधी दर्शन में दो प्रदर्शनियों के मंडप है "मेरा जीवन ही मेरा संदेश" और मिट्टी मॉडल से निर्मित “स्वतंत्रता संग्राम”।

मेरा जीवन ही मेरा संदेश शीर्षक की पहली दीर्घा में दीवारों पर सैकड़ों पुरालेखीय चित्र संक्षिप्त व्याख्याओं के साथ लगाए गए हैं। इनमें से कुछ तस्वीरों में एक बच्चे एवं एक युवा व्यक्ति के रूप में गांधी जी की दुर्लभ तस्वीरें हैं। एक अनुकृति उस घर की भी है जिसमें उनका जन्म हुआ था तथा सेना का वास्तविक वाहन भी है जिसमें उनके पार्थिव शरीर को अंत्सेष्टि स्थल तक ले जाया गया था, जिसे अब राजघाट के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त, आगंतुक गांधी जी के स्कूल की रिपोर्ट कार्ड, अखबारों की कतरन तथा कार्टून जो समसामयिक रिपोर्ट एवं उनकी गतिविधियों की समीक्षाओं को प्रदर्शित करती हैं, पत्रों का आदान-प्रदान, उनकी पत्नी तथा बच्चों की तस्वीरों एवं अन्य दिलचस्प सामग्रियां भी देख सकते है। इस प्रदर्शनी में गांधी जी की हत्या के बाद दुनिया भर के देशों में आने वाले वर्षों

में जारी किए गए स्मारक टिकटों को प्रदर्शित किया गया है; दूसरी प्रदर्शनी में पत्रों को प्रदर्शित किया गया है जो उन्हें भेजे गए थे।

विशेष रूप से ये पत्र दर्शाते हैं कि एक साधारण गुजराती वकील ने अपने जीवन काल में कितनी व्यापक प्रसिद्धि पाई। उदाहरण के लिए, एक पत्र 'गांधीजीः वे चाहे जहां भी हों' को संबोधित किया गया है; दूसरे पत्र मे जो न्यूयॉर्क से पोस्ट किया गया था लिफ़ाफ़ा पर केवल गांधी जी का रेखाचित्र यानि स्केच भर था। संक्षेप में, 274 पट्टिकाओं के साथ इस मंडप में निम्नलिखित हैंः

पट्टिका संख्या 1 से 273 में गांधी जी के जन्म से लेकर हत्या तक की तस्वीरें हैं, जिनकी संख्या लगभग 1600 हैं। पट्टिका संख्या 274 में महात्मा गांधी के जन्म शताब्दी वर्ष पर जारी की गई विभिन्न देशों के 75 टिकट हैं। नमक सत्याग्रह के दौरान उपयोग में लाई गई नौका एवं तख्ती तथा बंदूक वाहन जिसमें महात्मा गांधी के पार्थिव अवशेष को बिरला भवन से राजघाट तक ले जाया गया, भी यहां रखा गया है।

लाल क़िला

लाल किले को पांचवें मुगल बादशाह शाहजहाँ द्वारा 1639 में अपनी राजधानी शाहजहानाबाद के महल के रूप में बनाया था। इसका नाम लाल किला इसकी लाल बलुआ पत्थर की विशाल दीवारों की वजह से हुआ है। यह किला 1546 ईस्वी में इस्लाम शाह सूरी द्वारा निर्मित पुराने सलीमगढ़ किले के बिलकुल करीब है। इस किले के शाही हिस्से में मंडप की एक पंक्ति होती है, जिसे स्ट्रीम ऑफ़ पैराडाइज़ (नाहर-ए-बिहिश्त) के रूप में जाना जाता है। किला परिसर वो हिस्सा है जो शाहजहाँ और मुगल रचनात्मकता के क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए जाना जाता है।

लाल किला 17 वीं शताब्दी में शाहजहाँ के महल के रूप में बनाया गया था और इसे तब बनाया गया था जब उन्होंने इसे राजधानी शहर के रूप में इस्तेमाल किया था। लाल किले में कई मंडप हैं जो मुगल सम्राट की रचनात्मकता दर्शाता है। इस महल को वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी ने डिजाइन किया था। लाल किले को पवित्र नदी यमुना के किनारे पर बनाया गया है। आपको बता दें कि इस बड़े से लाल किले को बनाने में 10 साल का समय लग गया था। यह महल शुरू से ही कई सम्राटों और राजाओ का निवास स्थान रहा है, जिन्होंने इस पर शासन किया था। लाल किले का नाम 'लाल किला' इसलिए रखा गया है क्योंकि यह लाल बलुआ पत्थर में बनाया गया है। लाल किला देश की एक ऐसी जगह है जहाँ भारत के प्रधानमंत्री स्वतंत्रता दिवस पर अपना भाषण देते हैं।

जब शाहजहाँ ने इस किले पर शासन किया तब इसे शाहजहानाबाद कहा जाता था। अब इसे दिल्ली कहते हैं। जब शाहजहाँ के इस किले पर शासन करने के बाद औरंगज़ेब ने मुग़ल राजवंश पर शासन किया, तब लाल किला अपनी चमक खोने लगा था। बात दें कि लाल किले में एक चांदी की छत है जिसको बाद में पैसे जुटाने के लिए तांबे की छत के साथ बदल दिया गया था। इसके बाद साल 1793 में, एक फारसी सम्राट नादिर शाह ने लाल किले पर कब्जा कर लिया और किले से मूल्यवान संपत्ति छीन ली।

मराठों ने 16 वें मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय को हराया और 20 वर्षों तक दिल्ली पर शासन किया। बाद में उन्हें अंग्रेजों ने उन्हें हरा दिया और कोहिनूर हीरे सहित जो सभी मूल्यवान संपत्ति किले के अंदर रखी थी वो छीन ली। अंग्रेजों ने बहादुर शाह ज़फ़र का मुकुट, शाहजहाँ का शराब का प्याला और भी बहुत कुछ जैसे कीमती सामान को लूट लिया और ग्रेट ब्रिटेन भेज दिया। लाल किला स्मारक कभी एक शानदार संरचना हुआ करती थी, जो कीमती पत्थरों और धातुओं से बनाई गई थी।

लाल किला दिखने में बेहद आकर्षक लगता है। यह किला दिल्ली की शान है। लाल किले को अष्टकोणीय आकार में बनाया गया है। इस पूरे किले पर संगमरमर से सजावट की गई है। कोहिनूर हीरा कभी इस किले की सजावट का हिस्सा हुआ करता था लेकिन भारत में कब्ज़ा करने के बाद इसे अंग्रेज ले गए। लाल किले के अंदर तीन द्वार हैं और यह किला दिल्ली के सबसे बड़े किलों में से एक है।

लाल किला मुगल, हिंदू और फारसी स्थापत्य शैली से मिलकर बना हुआ है। इस बड़े किले के अंदर परिसर के भीतर, मोती मस्जिद, नौबत खाना जैसी बड़ी इमारतें हैं जो पहले संगीत कक्ष हुआ करती थी। मुमताज़ और रंग महल, जो महिलाओं की जगह और एक संग्रहालय था, यहाँ पर मुग़ल काल की सभी कलाकृतियां उपस्थित है। लाल किले के महलों और इमारतो में कई उद्यान, मंडप और सजावटी मेहराब हैं।

लाहोरी गेट लाल किले का मुख्य गेट है जिसका नाम जिसका नाम लाहौर शहर से लिया गया है। औरंगजेब के शासनकाल के दौरान इस गेट का सौंदर्य खराब हो गया था, जिसे शाहजहाँ ने "एक सुंदर महिला के चेहरे पर घूंघट" के रूप में वर्णित किया था। 1947 के बाद से भारतीय स्वतंत्रता दिवस के मौके पर राष्ट्रीय ध्वज को इस किले पर फहराया जाता है और प्रधानमंत्री अपना भाषण देते हैं।

दिल्ली गेट दक्षिण में एक सार्वजनिक प्रवेश द्वार है, जो बनावट में लाहौरी गेट के समान दिखता है। इस गेट के दोनों ओर दो बड़े पत्थर के हाथी एक दूसरे के आमने-सामने बने हुए हैं। मुमताज महल, लाल किला परिसर के अंदर की 6 संरचनाओं में से एक है। लाल किले के अंदर की सभी संरचनाएँ यमुना नदी से जुड़ी हुई हैं। इस महल का निर्माण सफ़ेद संगमरमर से किया गया था और जिन पर फूलों की आकृति बनी हुई है। यह मुग़ल शासकों की वास्तुकला और डिजाइन का पता लगाने के लिए एक प्रभावशाली संरचना है। ये पहले महिलाओं का रहने की जगह हुआ करता था और अब यह एक पुरातत्व संग्रहालय है। इस संग्रहालय के अंदर, मुगल काल से कई कलाकृतियां हैं जैसे तलवारें, कालीन, पर्दे, पेंटिंग और अन्य वस्तुएं रखी हुई हैं।

खास महल पहले मुगल सम्राट का निजी आवास हुआ करता था। बता दें कि इस महल के अंदर तीन कक्ष हैं। जिसमे से एक बैठने का कमरा, सोने का कमरा और एक और कक्ष। इस महल को बड़ी सुंदरता के साथ सफेद संगमरमर और फूलों की बनावट से सजाया गया है। इस महल में सम्राट की पत्नियाँ और की रखैलें रहती थीं। जब से इसे उज्वल रूप से चित्रित किया गया तब इसका नाम "पैलेस ऑफ कलर्स" रखा गया। इस महल को दर्पण की मोज़ेक के साथ सजाया गया था। इस महल में जमीन के नीचे बहते हुए पानी की एक धारा थी जो गर्मियों के दौरान इस महल के तापमान को ठंडा रखती थी।

हीरा महल, लाल किले के दक्षिणी किनारे का एक भाग है, जिसे बहादुर शाह द्वितीय ने बनाया गया है। बताया जाता है कि बहादुर शाह ने इस महल के अंदर एक बहुत ही कीमती हीरे को छिपाया हुआ था, जो कोहिनूर हीरे से भी ज्यादा कीमती था। उत्तरी तट पर मोती महल को 1857 के विद्रोह के दौरान नष्ट कर दिया गया था। औरंगज़ेब ने मोती मस्जिद को अपने निजी इस्तेमाल के लिए बनवाया था मोती मस्जिद का अर्थ है पर्ल मस्जिद। इस मस्जिद में कई गुंबद और मेहराब हैं। इस मस्जिद को संगमरमर से बनवाया गया था। इस मस्जिद में एक आंगन है। जहाँ पर आपको वास्तुकला और डिजाइन की सादगी को देख सकते हैं।

दीवान-ए-आम को मुग़ल बादशाह शाहजहां ने 1631 से 1640 के बीच बनवाया था। यह बादशाहों के महलनुमा शाही अपार्टमेंट हुआ करता था। इस जगह को अलंकृत सजावट के साथ सफेद संगमरमर में बनाया गया है। इस जगह पर सम्राट लोगों को देखते थे और लोग उन्हें देखते थे। हमाम एक ऐसी इमारत है जिसमें स्नान किया जाता था। इस इमारत का उपयोग सम्राटों द्वारा किया जाता था। इस इमारत में एक ड्रेसिंग रूम और नलों से बहता गर्म पानी है। जब यहाँ पर मुगलों ने शासन था उस समय इन स्नान में गुलाब जल का उपयोग किया जाता था। यह स्नानघर पुष्प रूपांकनों और सफेद संगमरमर में डिज़ाइन किए गए हैं।

इसके उत्तर में एक वृहत औपचारिक उद्यान है जिसे हयात बख्श बाग कहते हैं। इसका अर्थ है जीवन दायी उद्यान। यह दो कुल्याओं द्वारा द्विभाजित है। एक मण्डप उत्तर दक्षिण कुल्या के दोनों छोरों पर स्थित हैं एवं एक तीसरा बाद में अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर द्वारा 1842 बनवाया गया था। यह दोनों कुल्याओं के मिलन स्थल के केन्द्र में बना है। राजगद्दी के पीछे की ओर शाही निजी कक्ष स्थापित हैं। इस क्षेत्र में, पूर्वी छोर पर ऊँचे चबूतरों पर बने गुम्बददार इमारतों की कतार है, जिनसे यमुना नदी का किनारा दिखाई पड़ता है। ये मण्डप एक छोटी नहर से जुडे हैं, जिसे नहर-ए-बहिश्त कहते हैं, जो सभी कक्षों के मध्य से जाती है। किले के पूर्वोत्तर छोर पर बने शाह बुर्ज पर यमुना से पानी चढ़ाया जाता है, जहाँ से इस नहर को जल आपूर्ति होती है। इस किले का परिरूप कुरान में वर्णित स्वर्ग या जन्नत के अनुसार बना है। यहाँ लिखी एक आयत कहती है। महल की योजना मूलरूप से इस्लामी रूप में है, परंतु प्रत्येक मण्डप अपने वास्तु घटकों में हिन्दू वास्तुकला को प्रकट करता है। लालकिले का प्रासाद, शाहजहानी शैली का उत्कृष्ट नमूना प्रस्तुत करता है।

दीवान-ए-खास, जो राजा का मुक्तहस्त से सुसज्जित निजी सभा कक्ष था। यह सचिवीय एवं मंत्रीमण्डल तथा सभासदों से बैठकों के काम आता थाइस म्ण्डप में पीट्रा ड्यूरा से पुष्पीय आकृति से मण्डित स्तंभ बने हैं। इनमें सुवर्ण पर्त भी मढी है, तथा बहुमूल्य रत्न जडे हैं।

इसकी मूल छत को रोगन की गई काष्ठ निर्मित छत से बदल दिया गया है। इसमें अब रजत पर सुवर्ण मण्डन किया गया है।

जामा मस्जिद

दिल्ली में जामा मस्जिद को अक्सर भारत की सबसे शानदार मस्जिद के रूप में जाना जाता है और सभी सही कारणों से। पुरानी दिल्ली के मध्य में स्थित, 17 वीं शताब्दी की यह विशाल इमारत मुगल सम्राट शाहजहाँ की स्थापत्य कला का प्रतिनिधित्व करती है।

यह शाहजहाँ ही था जिसने चारदीवारी वाले शहर शाहजहानाबाद (या पुरानी दिल्ली जैसा कि आज जाना जाता है) में जामा मस्जिद बनवाई थी, जो उसके शासनकाल के दौरान मुगल साम्राज्य की राजधानी थी। मस्जिद का निर्माण 1644 में शुरू हुआ और 1656 में पूरा होने से पहले बारह वर्षों तक चला। सम्राट के प्रधान मंत्री सादुल्लाह खान की देखरेख में 5000 से अधिक श्रमिक निर्माण कार्य में लगे हुए थे। शाहजहाँ ने इस भव्य स्मारक को बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी और इसे दस लाख रुपये की लागत से बनाया गया।

प्रारंभ में, मस्जिद का नाम मस्जिद-ए-जहाँ नुमा था, जिसका अर्थ है 'वह मस्जिद जो दुनिया को दर्शाती है'। बाद में इसे जामा मस्जिद या शुक्रवार मस्जिद के नाम से जाना जाने लगा। मस्जिद का उद्घाटन 23 जुलाई 1656 को अब्दुल गफूर शाह बुखारी नाम के एक इमाम ने किया, जो शाहजहाँ के निमंत्रण पर बुखारा (अब उज्बेकिस्तान) से आए थे। उन्हें शाहजहाँ द्वारा मस्जिद का पहला शाही इमाम भी नियुक्त किया गया था।

अपने निर्माण के बाद से, मस्जिद शहर में शाहजहाँ द्वारा निर्मित एक अन्य प्रतिष्ठित स्मारक, अर्थात् लाल किले के ठीक बगल में खड़ी है। मुगल काल के अंत तक यह बादशाहों की शाही मस्जिद थी। 1857 के विद्रोह के बाद विजयी ब्रिटिश शासकों ने मस्जिद को नष्ट करने के इरादे से उस पर कब्ज़ा कर लिया। हालाँकि, जनता के कड़े विरोध के कारण उन्हें इस निर्णय पर पुनर्विचार करना पड़ा और संरचना को कोई नुकसान नहीं हुआ। वर्तमान में, मस्जिद दिल्ली वक्फ बोर्ड के नियंत्रण में है।

दिल्ली की जामा मस्जिद को मुगल साम्राज्य के दौरान बनी सबसे बेहतरीन मस्जिद माना जाता है। इंडो-इस्लामिक स्थापत्य शैली में लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर का उपयोग करके निर्मित, इसकी लंबाई लगभग 261 फीट और चौड़ाई 90 फीट है। यह संरचना तीन विशाल मेहराबदार द्वारों, तीन संगमरमर के गुंबदों, चार टावरों और दो विशाल मीनारों से सुशोभित है। इसमें एक विशाल प्रांगण भी है जिसमें एक समय में 25,000 से अधिक लोग प्रार्थना कर सकते हैं।

मस्जिद के तीन प्रवेश द्वारों में से, पूर्वी हिस्से में 35 सीढ़ियाँ हैं। इस द्वार को शाही प्रवेश द्वार के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि यह मुगल सम्राटों के उपयोग के लिए आरक्षित

था। उत्तरी और दक्षिणी तरफ के द्वारों में क्रमशः 39 और 33 सीढ़ियाँ हैं। दोनों मीनारों में से प्रत्येक में एक उभरी हुई बालकनी के साथ पांच मंजिलें हैं और 130 फीट की ऊंचाई तक पहुंचती है। शीर्ष पर चढ़ने के लिए प्रत्येक मीनार के अंदर 130 सीढ़ियाँ हैं।

मस्जिद में आकर्षक रूप से डिज़ाइन किया गया काले और सफेद संगमरमर का फर्श है जिसमें उपासकों के लिए 899 बॉर्डर वाले स्थान निर्धारित हैं। भव्य मेहराब, पुष्प डिजाइन और फ्लोरोसेंट रूपांकन इस मस्जिद के अंदरूनी हिस्सों को सुशोभित करते हैं। प्रार्थना कक्ष के केंद्र के तोरणद्वार पर 'द गाइड' शब्द लिखा हुआ है। मस्जिद के महत्वपूर्ण अवशेषों में हिरण की खाल पर लिखी कुरान की एक प्रति, पैगंबर मोहम्मद की दाढ़ी का एक लाल बाल, उनके जूते की एक जोड़ी और एक संगमरमर के ब्लॉक पर उनके पैरों के निशान शामिल हैं।

मस्जिद शाहजहाँ द्वारा निर्मित अंतिम वास्तुशिल्प चमत्कारों में से एक है।
शाहजहाँ के समय में, उसके द्वारा मस्जिद तक पहुँचने के लिए पूर्वी द्वार का उपयोग किया जाता था। उत्तरी द्वार का उपयोग रईसों द्वारा किया जाता था जबकि दक्षिणी द्वार आम लोगों के लिए खुला था।

शाहजहाँ के बेटे औरंगज़ेब ने लाहौर में बादशाही मस्जिद की संरचनात्मक योजना तैयार करते समय इस मस्जिद से प्रेरणा ली।
1857 की क्रांति से पहले, मस्जिद के परिसर में एक मदरसा था। विद्रोह के दौरान इसे नष्ट कर दिया गया।

1948 में, हैदराबाद के अंतिम निज़ाम से संरचना के एक-चौथाई फर्श के जीर्णोद्धार कार्य के लिए 75,000 रुपये के दान के लिए संपर्क किया गया था। निज़ाम ने इसके बदले 3 लाख रुपये का दान दिया, और निर्दिष्ट किया कि पूरे मस्जिद के फर्श का नवीनीकरण किया जाएगा ताकि कोई भी हिस्सा पुराना न दिखे।
आम धारणा के विपरीत, दिल्ली जामा मस्जिद भारत की सबसे बड़ी मस्जिद नहीं है। 175,000 लोगों की क्षमता वाली भोपाल की ताज-उल-मस्जिद इस सूची में सबसे ऊपर है।
मस्जिद कनॉट प्लेस और संसद भवन की सीधी रेखा में है।

राष्ट्रीय बाल भवन

राष्ट्रीय बाल भवन, मानव संसाधन और विकास मंत्रालय द्वारा पूर्ण रूप से वित्त पोषित एक स्वायत्तशासी संस्था है, जो स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग के तहत कार्य करती हैं। 1956 में इसके गठन से ही बाल भवन ने देशभर में उत्तरोत्तर प्रगति की है। वर्तमान में राष्ट्रीय बाल भवन से सम्बद्ध 68 राज्य बाल भवन तथा 10 बाल केन्द्र हैं। सम्बद्ध बाल भवनों और बाल केन्द्रों के माध्यम से बाल भवन की स्कूल छोड़ने वाले बच्चे, सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के बच्चे, गलियों के बच्चे तथा विशेष बच्चों तक पहुँच है। दिल्ली के कई स्कूलों ने राष्ट्रीय बाल भवन की सदस्यता ली है तथा औपचारिक और अनौपचारिक संस्थानों के इस साझा प्रयासों से ही बच्चों की रचनान्तमक अभिवृद्धि में बड़ी सफलता प्राप्त हुई है।

राष्ट्रीय बाल भवन बच्चों को उनके लिंग, जाति, धर्म, रंग आदि भेदभाव के बिना तनावमुक्त वातावरण में विभिन्न गतिविधियों में शामिल कर उनके समग्र विकास के लिए कार्यरत है। इनमें कुछ प्रमुख गतिविधियाँ हैं- क्ले माडलिंग, पेपर मैची, संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, हस्त शिल्पकला, संग्रहालय गतिविधि, फ़ोटोग्राफ़ी, वीडियोग्राफ़ी, इंडोर-आउटडोर खेल, गृह प्रबंधन, पारम्परिक कला, शैक्षिक और इन्नोवैटिव खेल/चेस, विज्ञान रोचक हैं इत्यादि। राष्ट्रीय बाल भवन के कुछ विशेष आकर्षण हैं- मिनी ट्रेन, मिनी ज़ू, फ़िश कार्नर, साइंस पार्क, फ़नी मिरर, कल्चर क्राफ़्ट विलेज। राष्ट्रीय बाल भवन में राष्ट्रीय प्रशिक्षण संसाधन केन्द्र (एनटीआरसी) है, जो विभिन्न गतिविधियों को प्रशिक्षित करता है। इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य और ध्यान बच्चों के सर्वागीण विकास और व्यक्तित्व विकास में अध्यापकों को प्रशिक्षित करना है, क्योंकि अध्यापक समुदाय बच्चों की सामाजिक आर्थिक, भावुक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक ज़रूरतों को समझने में कुशल होते हैं। एनटीआरसी का उद्देश्य अध्यापकों और छात्रों दोनों के लिए अध्यापन और सीखने को एक सुखद अनुभव बनाना भी है।

राष्ट्रीय बाल भवन ने उन रचनाशील बच्चों को उनके सामाजिक आर्थिक स्तर में भेद किए बिना पहचान, सम्मान और देखभाल के लिए एक योजना भी शुरू की है। 'द बालश्री स्कीम' योजना के पीछे मक़सद यही है कि रचनात्मकता मानवीय संभावना है, जिसका सीधा सम्बन्ध स्व-अभिव्यक्ति और स्व-विकास से होता है। इस योजना के तहत चार रचनात्मक क्षेत्रों अर्थात् सृजनात्मक कला, सृजनात्मक प्रदर्शन, सृजनात्मक वैज्ञानिक खोज, सृजनात्मक लेखन में 9 से 16 वर्ष के आयु वर्ग की रचनात्मकता वाले बच्चों की पहचान करना है। यह योजना 1995 से चालू है और तब से बच्चों को उनके रचनात्मकता क्षेत्रों में उत्कृष्टता के लिए पहचान कर उन्हें सम्मानित किया जा चुका है। ये सम्मान उनको या तो राष्ट्रपति या उनकी पत्नी से राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक रंगारंग कार्यक्रम में दिये गए हैं।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय बाल भवन कुछ स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम जैसे- कार्यशालाएँ, ट्रैकिंग कार्यक्रम, टाक शो, कैंप, आयोजित करता है। इसके अलावा पृथ्वी दिवस, पर्यावरण दिवस इत्यादि भी मनाता है। अंतर्राष्ट्रीय बाल सभा, युवा पर्यावरणविद सम्मेलन, सभी के लिए शिक्षा तथा अध्यक्षों और निदेशकों का अखिल भारतीय सम्मेलन मानव संसाधन और विकास मंत्रालय की देखरेख में आयोजित करता है। इन सबके अतिरिक्त राष्ट्रीय बाल भवन देश के विभिन्न भागों से अपने बच्चों को सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न देशों में भेजता है और ये बच्चे उप महाद्वीप की सामाजिक सांस्कृतिक विशिष्टता के युवा राजदूत के रूप में कार्य करते हैं। इसके साथ-साथ राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य बच्चे, देशभर में सम्बद्ध बाल भवनों के बच्चे और राष्ट्रीय बाल भवन के सदस्य स्कूल/संस्थान भी वैश्विक समस्याओं के थीम पर अंतर्राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता में हिस्सा लेते हैं।

ताजमहल

ताजमहल भारत का प्रमुख पर्यटक आकर्षण है। यह एक विश्व विरासत स्मारक भी है। मुगल बादशाह शाहजहाँ ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज की याद में इस महान कलाकृति का निर्माण करवाया था। सफेद संगमरमर से बनी यह ऐतिहासिक इमारत अपने आप में नायाब है।

ताजमहल चौतरफा बाग के पश्चिमी किनारे पर एक ऊँचे चबूतरे पर बना हुआ है। आगरा शहर के इस हिस्से को बेगम मुमताज महल के नाम से मुमताजाबाद के नाम से जाना जाता है। ताजमहल परिसर की डिजाइन ग्रीड पैटर्न पर आधारित है। उत्तर की ओर लाल बलुआ पत्थर से बनी इमारत को ऐतिहासिक दस्तावेजों में चौक ए इलोखाना कहा गया है। यह शाही कर्मचारियों के लिए बनाया गया था।
इसके बाद 30 मीटर ऊँचा लाल बलुआ पत्थर का बना दरबाजा है जिससे होकर बाग परिसर में प्रवेश करना होता हैइसी परिसर में ताजमहल स्थित है। इस दरवाजे से होकर हम मुख्य बाग में पहुंचते हैं जो पानी की नहर से चार भागों में चौकोर ढंग से विभाजित हैये बीच में एक बड़े टैंक के पास मिलते हैंइस बात का मॉडल मिथकीय स्वर्ग के बाग पर आधारित है। इस बाग के उत्तरी हिस्से में ताजमहल है ताज के पश्चिमी हिस्से में लाल पत्थर से बनी एक मस्जिद है और पूर्वी हिस्से में इसकी अनुकृति है। चबूतरे के बीचोबीच ताजमहल स्थित है जिसके प्रत्येक कोने में एक चार मंजिली संगमरमर की मीनार है।

ताज की शैलीगत विशेषताएं इस प्रकार हैं: ताजमहल की योजना हुमायूं के मकबरे पर आधारित हैयह अपने शिल्प में तैमूरी है उसका बाहरी हिस्सा संगमरमर का बना है जिसमें रंगीन पत्थरों की पच्चीकारी की गई है। संगमरमर पर कुरान की आयतें काले अक्षर में लिखी हैं। मुख्य कब्रगाह अष्टकोणीय है जिसके मध्य में मुमताज महल की कब्र है, इसके बगल में शाहजहां की कब्र है। आरंभ में ये मकबरे शाहजहां के सुनार बेबदल खां द्वारा निर्मित सोने की जाली से घिरे थेबाद में चोरी या लूट के भय से शाहजहां ने इसे हटाकर संगमरमर के नक्काशीदार जाली लगवा दी।

प्रत्येक स्मारक का अलंकरण किया जाता है। मुमताज महल आसफ खां की बेटी और जहांगीर के प्रधानमंत्री इतिमादुदौला की पोती थीं। उनका जन्म अप्रैल 1593 ई. में हुआ था और वह शाहजहां से' मात्र डेढ़ साल छोटी थीशाहजहां और मुमताज महल की शादी 1607 ई. में ही तय हो गई थी परंतु इसे अंजाम देने में पांच वर्ष बीत गए और 1612 ई. में उन दोनों की शादी हुईइसी बीच 1609 ई. में शाहजहां की शादी मुजफ्फर हुसैन मिर्जा की बेटी से हुई। उनकी तीसरी पत्नी अब्दुर रहीम खानेखाना की पोती थीं। मुमताज महल शाहजहां की सबसे प्रिय बेगम थीं। उन्होंने चौदह बच्चों को जन्म दिया जिनमें से केवल सात जीवित रह पाए।

एक बच्चे को जन्म देते हुए 1631 ई. में बुरहानपुर में उनकी मृत्यु हो गई जहां ताप्ती नदी के किनारे जैनाबाद नामक बाग में अस्थाई तौर पर उन्हें दफना दिया गया।

ऐसा प्रतीत होता है कि शाहजहां ने जल्द ही अपनी प्रिय बेगम को आगरा में दफनाने और कब्र पर अनुपम और अतुलनीय इमारत बनाने का मन बनाया। जनवरी 1632 ई. को ताजमहल की नींव रखी गई। आज जहां ताजमहल है पहले वहां राजा मान सिंह का महल था इसके बदले में उनके पोते राजा जय सिंह को ढेर सारी सम्पत्ति दी गई। मुमताज महल को अंतिम रूप से यहीं दफनाया गया और भव्य समाधि बनने तक इसके ऊपर एक छोटा सा गुंबद बना दिया गया। लाहौर निवासी उस्ताद अहमद (1570-1649) ताजमहल का वास्तुकार था जिसे शाहजहां ने नादिर-उल अत्र (युग का आश्चर्य) की उपाधि प्रदान की थी। उसने दो सरकारी अधिकारियों मकरमात खां और मीर अब्दुल करीम की निगरानी में काम किया।

ऐतिहासिक दस्तावेजों में इसका जिक मिलता है:
अमानत खां कैलिग्राफर (सुलेखक) था। यह उसकी पदवी थी। उसका नाम अब्दुल हक्क था और वह शिरान का रहने वाला था। उसके बड़े भाई का नाम मुल्ला शुक अल्लाह था जो अफजल खां के नाम से प्रसिद्ध था। 1632 ई. के मध्य में अमानत खां को ताजमहल का सुलेखक नियुक्त किया गया। उसके सुलेखीय डिजाइनों को 1633 के अंत या 1634 की शुरुआत में ताजमहल में उकेरा गया। ताजमहल में दो स्थलों पर उसके हस्ताक्षर मिलते हैं। अमानत खां के हस्ताक्षर तीन और अभिलेखों में मिलते हैं, मसलन सिकंदरा का दरवाजा, आगरा शहर का मदरसा शाही मस्जिद और लाहौर के निकट सरी अमानत खां।

बाग मुगलकाल में आमतौर पर समाधियों के चारों ओर बाग बनाए जाते थे। परंतु ताजमहल इनसे अलग है: ताज चौकोर बाग के अंतिम सिरे पर स्थित है। बाग का क्षेत्रफल 540 मीटर 300 मीटर है उत्तर से दक्षिण की ओर बीचोबीच एक नहर गुजरती है जो इसे दो भागों में बांटती है। ये भाग पूर्व-पश्चिम की दिशा में बहने वाली छोटी नहरों द्वारा विभक्त किए गए हैं। कभी इन नहरों के किनारे पेड़ों की पंक्तियां हुआ करती थीं। यह चौरस बाग आज चारों ओर से पेड़ों से घिरा है। इस समाधि को प्रकृति की खुशनुमा हवा प्रदान करने और उसे इसके थपेड़े से बचाने के लिए ही पेड़ों की पंक्तियां खड़ी की गई हैं। पश्चिमी किनारे पर वृक्षावति के अंतिम सिरे पर प्रवेश द्वार के पास एक छोटा सा संग्रहालय है जिसमें ताजमहल से जुड़ी महत्वपूर्ण वस्तुएं रखी हुई हैं।

इतिहास में ताजमहल का वर्णन रोजा-ए-मुनव्वर (चमकती समाधि) के रूप में हुआ है। शाहजहां के दरबारी इतिहासकारों ने भी ताजमहल का विवरण प्रस्तुत किया है। इसका

उल्लेख हम करने जा रहे हैं। अब्दुल हमीद लाहौरी ने पादशाहनामा में और यूरोपीय यात्रियों ने यंत्र-तंत्र इसका वर्णन किया है।

यहां हम लाहौरी द्वारा प्रस्तुत वर्णन का उल्लेख कर रहे हैं। इसे हमने ताजमहल, एक चमकती समाधि (Taj Mahal, The Illuminated Tomb) से उद्धत किया है। यह सत्रहवीं शताब्दी के दसतावेज स्रोतों का संग्रह है जिसे डब्ल्यू ई. बेगले और जेड ए देसाई ने संग्रहीत और अनुदित किया है। (इसका प्रकाशन यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन प्रेस, लंदन से 1989 में हुआ)। पवित्र समाधि के निर्माण का विवरण बुनियाद और नींव गौरवशाली राज्यारोहण के पांचवे वर्ष आरंभ (जनवरी, 1632) में बुनियाद डालने के लिए यमुना के किनारे खुदाई का काम आरंभ हुआ। यमुना उत्तर की ओर बह रही थी । बुनियाद खोदने वालों ने अपने मजबूत हाथों से पानी के तल तक जमीन खोद दी, कुशल राज मिस्त्रियों (बन्नयान) और वास्तुकारों (मिमरान) ने अपनी बुद्धिमानी और योग्यता से मजबूत बुनियाद (असास) डाली और पत्थर तथा चूने की मदद से उसे जमीन (साथे जमीन) तक ले आए।

इसके ऊपर ईट और चूने की मदद से ऊँचा चबूतरा (चबूतरा असा) एक खंड (यक लख्त) में बनाया गया, जो 374 हाथ (जिरां) लंबा, 140 हाथ चौड़ा और 16 ऊंचा था। यह चबूतरा इस विशाल समाधि का प्लिंथ (कुर्सी) बना। पूरे साम्राज्य के कोने-कोने से पत्थर काटने वाले (संगतराश), मणिकार (मुनब्बतकार) और पच्चीकारी करने वाले (पर्चीगार) बेहतरीन कारीगरों को इकट्ठा किया गया जिन्होंने मिलकर काम किया। प्लिंथ के सामने वाला हिस्सा लाल पत्थरों के चिकने स्लैब (संग ए सुर्ख ए तराशिदा) से इस तरह पाटा गया है कि गौर से देखने पर भी कहीं फाँक नजर नहीं आता। प्लिंथ का फर्श भी इसी लाल पत्थर से बनायी गयी है।

इस प्लेटफार्म प्लिंथ के बीच में एक और मजबूत (यक लख्त) चबूतरा (कुर्सी) बना हुआ है। इसका वर्ग क्षेत्र 120 हाथ और ऊंचाई 7 हाथ हैयह पूरी तरह से संगमरमर से ढका हैसुंदरता में इसकी तुलना ईश्वर के सिंहासन (अर्शमेरताबाद) से की गई है। इस दूसरे पलेटफार्म के मध्य में विशाल और भव्य समाधि की इमारत बनाई गई है। यह बगदादी शिल्प (तराह-ए-मुसम्मां-ए-बगदादी) के आधार पर बनाया गया है। इसका वृत्त 70 हाथ है और प्लिंथ की ऊंचाई एक हाथ है। इमारत के ठीक बीच में कब्र (मरगद) के ऊपर संगमरमर का गुंबदनुमा हाल बना हुआ है। सतह (साथ) से गोलार्ध (जिह) तक गुंबद के नीचे बना हाल अष्टकोणीय है और इसके क्षेत्रफल 22 हाथ है। गोलाई वाले हिस्से पर मुकरन प्रतीक उकेरे गए हैं और गुंबद सतह से 32 गज ऊंचा हैइन्हें ज्यामीतिय पद्धति (गालिब-कारी) से संगमरमर के पत्थरों से पाटा गया है।

इस अंदरूनी गुंबद के ऊपर अमरूद के आकार का (अमरूदी-शक्ल) का एक और विशाल गुंबद बनाया गया है। इसमें गणितीय गोण (दाराजार-ए-दागेग) और ज्यामितीय पद्धति (मुंहदिस-ए-फल्क) का उपयोग किया गया है। इस विशाल गुंबद का बाहरी वृत्त (मितंग) 110 गज (35 गज क्षेत्रफल) है और इस पर 11 गज ऊंचा स्वर्ण कलश लगा है जो सोने की तरह चमकता है। जमीन से इसकी ऊंचाई 107 गज है।इस गुंबद के बीच में उस महान महिला की कब्र (मजिआ) है। इनका स्थान स्वर्ग में भी सर्वोपरि है। इस कब्र पर अल्लाह का करम है और महानमलिका का ईश्वरीय शक्ति से मिलन हो चुका है।

स्वर्ग के इस निवासी की वास्तविक कब्र (तुरबत) के ऊपर संगमरमर का चबूतरा बना है जिसका एक छतरी (सूरत-ए-गब) बनाई गई है। इसके चारों ओर अष्टकोणीय जाली (महजर-ए-मुशब्बक) लगी हुई है। यह भी संगमरमर से बनाई गई है और इस पर तुर्की शैली (तरह-बंद-ए-रूमी) में अलंकरण किया गया है। इसे बनाने में 10,000 रुपए खर्च हुए थे।इस भाग के अंदरूनी हिस्से में सोने का काम (तलास मीनाकार) किया गया था और उसे खूबसूरती से जड़ा (कउकाबा) गया था। ऊपर से लटकता लैंप (गंदील) था और स्वर्ग के समान दिखने वाले इस मजार में चार कमान (ताग) थे जिनमें एलेप्पो शीशा लगा था। इसमें आने जाने का एक रास्ता था

जमीन से 23 गज ऊपर उठे संगमरमर के चबूतरे (कुर्सी) के चारों कोने पर संगमरमर की बनी चार मीनारें खड़ी हैं।, जिनमें अंदर की ओर सीढ़ियां बनी हैं और ऊपर छतरी (चारताग) सी बनी है। इसका वृत्त 7 हाथ (आधार) है और चबूतरे से कलस तक इसकी ऊंचाई 52 हाथ है। ऐसा लगता है मानों स्वर्ग की ओर जाने के लिए सीढ़ियां लगाई गई हैं।

स्वर्ग के समान प्रतीत होने वाली इस समाधि के चबूतरे का रास्ता भी संगमरमर निर्मित है, काले पत्थरों और सफेद संगमरमर का सुंदर समन्वय इसका आकर्षण और भी बढ़ा देता है और यह दिन हो या रात चमकता रहता है। इस समाधि के बाहर और अंदर का नजारा तारीफ से परे हैं। इसमें कलाकारों ने आश्चर्य और चमत्कार से भरी कारीगरी रंगों और बहुमूल्य जेवरातों का प्रयोग किया जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता है और इसमें जड़ें मोती का उल्लेख जबान नहीं कर सकती, उसकी चमक के सामने सूरज की चमक भी फीकी पड़ जाती है और दुनिया को प्रकाशमान करने वाला भी संकोच महसूस करने लगता है। इसकी चमक पर आंखें टिक नहीं पातीयह इमारत मनुष्य की कल्पना और इसके चमत्कार को समझना मानव-बुद्धि की सीमा से परे है।

इस इमारत के अंदर और बाहर कारीगरों ने अपनी जिस कला का प्रदर्शन किया है जिसकी चमक से सूरज की लज्जा आती है और जिसका फर्श सोते की तरह बहता नजर आता है-

इसकी नक्काशी और रत्न जड़ने की कला में एक जादू है, इसका वर्णन न कभी पूरा हो सकता है, न समाप्त हो सकता है। यहां तक कि अगर समुद्र की स्याही और पेड़ों के कलम बना लिए जाएं तब भी इसका बखान खत्म नहीं होगा।

ताजमहल बनने के बाद शाहजहां ने कारीगरों के हाथ काट देने का आदेश दिया ताकि फिर से कोई दूसरा व्यक्ति चाहकर भी ऐसा स्मारक न बना सके। इतिहास में इसका कोई उल्लेख या प्रमाण दूर-दूर तक भी नहीं मिलता है। अपनी मृत्यु के समय मुमताज महल ने इच्छा जाहिर की थी उसकी समाधि ऐसी बनाई जाए जिसका कोई जोड़ न हो। परंतु तथ्य यह है कि पूरी इमारत शाहजहां के प्रयत्न से बनी थी और यह विचार भी उसी का था। इतिहास में वर्णित मुमताज की अंतिम इच्छा के अनुसार बादशाह उनके बच्चों और माँ की देखभाल करेंगे। शाहजहां ने यमुना के किनारे अपनी समाधि बनानी शुरू की थी पर उत्तराध्कार के युद्ध के कारण यह काम रूक गया। परंतु इतिहास में इसका कोई जिक्र नहीं है। टेवेरनियर की इसी प्रकार की टिप्पणी का कारण यह कथा फैली है।

मथुरा श्रीकृष्ण जन्मभूमि

मथुरा भारत का प्राचीन नगर है। यहां पर से 500 ईसा पूर्व के प्राचीन अवशेष मिले हैं, जिससे इसकी प्राचीनता सिद्ध होती है। उस काल में शूरसेन देश की यह राजधानी हुआ करती थी। पौराणिक साहित्य में मथुरा को अनेक नामों से संबोधित किया गया है जैसे- शूरसेन नगरी, मधुपुरी, मधुनगरी, मधुरा आदि। उग्रसेन और कंस मथुरा के शासक थे जिस पर अंधकों के उत्तराधिकारी राज्य करते थे।

मथुरा यमुना नदी के तट पर बसा एक सुंदर शहर है। मथुरा जिला उत्तरप्रदेश की पश्चिमी सीमा पर स्थित है। इसके पूर्व में जिला एटा, उत्तर में जिला अलीगढ़, दक्षिण-पूर्व में जिला आगरा, दक्षिण-पश्चिम में राजस्थान एवं पश्चिम-उत्तर में हरियाणा राज्य स्थित हैं। मथुरा, आगरा मण्डल का उत्तर-पश्चिमी जिला है। मथुरा जिले में चार तहसीलें हैं- मांट, छाता, महावन और मथुरा तथा 10 विकास खण्ड हैं- नन्दगांव, छाता, चौमुहां, गोवर्धन, मथुरा, फरह, नौहझील, मांट, राया और बल्देव हैं।

श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा के कारागार में हुआ था। पिता का नाम वासुदेव और माता का नाम देवकी। दोनों को ही कंस ने कारागार में डाल दिया था। उस काल में मथुरा का राजा कंस था, जो श्रीकृष्ण का मामा था। कंस को आकाशवाणी द्वारा पता चला कि उसकी मृत्यु उसकी ही बहन देवकी की आठवीं संतान के हाथों होगी। इसी डर के चलते कंस ने अपनी बहन और जीजा को आजीवन कारागार में डाल दिया था।

जन्मभूमि का इतिहास : जहां भगवान कृष्ण का जन्म हुआ पहले वह कारागार हुआ करता था। यहां पहला मंदिर 80-57 ईसा पूर्व बनाया गया था। इस संबंध में महाक्षत्रप सौदास के समय के एक शिलालेख से ज्ञात होता है कि किसी 'वसु' नामक व्यक्ति ने यह मंदिर बनाया था। इसके बहुत काल के बाद दूसरा मंदिर सन् 800 में विक्रमादित्य के काल में बनवाया गया था, जबकि बौद्ध और जैन धर्म उन्नति कर रहे थे।

इस भव्य मंदिर को सन् 1017-18 ई. में महमूद गजनवी ने तोड़ दिया था। बाद में इसे महाराजा विजयपाल देव के शासन में सन् 1150 ई. में जज्ज नामक किसी व्यक्ति ने बनवाया। यह मंदिर पहले की अपेक्षा और भी विशाल था, जिसे 16वीं शताब्दी के आरंभ में सिकंदर लोदी ने नष्ट करवा डाला।

ओरछा के शासक राजा वीरसिंह जू देव बुन्देला ने पुन: इस खंडहर पड़े स्थान पर एक भव्य और पहले की अपेक्षा विशाल मंदिर बनवाया। इसके संबंध में कहा जाता है कि यह इतना ऊंचा और विशाल था कि यह आगरा से दिखाई देता था। लेकिन इसे भी मुस्लिम शासकों ने सन् 1669 ईस्वी में नष्ट कर इसकी भवन सामग्री से जन्मभूमि के आधे हिस्से पर एक भव्य ईदगाह बनवा दी गई, जो कि आज भी विद्यमान है।

इस ईदगाह के पीछे ही महामना पंडित मदनमोहन मालवीयजी की प्रेरणा से पुन: एक मंदिर स्थापित किया गया है, लेकिन अब यह विवादित क्षेत्र बन चुका है क्योंकि जन्मभूमि के आधे हिस्से पर ईदगाह है और आधे पर मंदिर।

मथुरा परिक्रमा : मथुरा परिक्रमा में होते हैं कृष्ण से जुड़े प्रत्येक स्थलों के दर्शन। माना जाता है कि यह परिक्रमा चौरासी कोस की है जिसके मार्ग में अलीगढ़, भरतपुर, गुड़गांव, फरीदाबाद की सीमा लगती है, लेकिन इसका अस्सी फीसदी हिस्सा मथुरा जिले में ही है।

मथुरा के अन्य मंदिर : मथुरा में जन्मभूमि के बाद देखने के लिए और भी दर्शनीय स्थल है :- जैसे विश्राम घाट की ओर जाने वाले रास्ते पर द्वारकाधीश का प्राचीन मंदिर, विश्राम घाट, पागल बाबा का मंदिर, इस्कॉन मंदिर, यमुना नदी के अन्य घाट, कंस का किला, योग माया का स्थान, बलदाऊजी का मंदिर, भक्त ध्रुव की तपोस्थली, रमण रेती आदि।

वृन्दावन कृष्ण मंदिर

वृन्दाव, भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के मथुरा ज़िले में स्थित एक महत्वपूर्ण धार्मिक व ऐतिहासिक नगर है। वृन्दावन भगवान श्रीकृष्ण की लीला से जुडा हुआ है। यह स्थान श्री कृष्ण की कुछ अलौकिक बाल लीलाओं का केन्द्र माना जाता है। यहाँ विशाल संख्या में श्री कृष्ण और राधा रानी के मन्दिर हैं । बांके विहारी जी का मंदिर, श्री गरुड़ गोविंद जी का मंदिर व राधावल्लभ लाल जी का, ठा.श्री पर्यावरण बिहारी जी का मंदिर बड़े प्राचीन हैं । इसके अतिरिक्त यहाँ श्री राधारमण, श्री राधा दामोदर, राधा श्याम सुंदर, गोपीनाथ, गोकुलेश, श्री कृष्ण बलराम मन्दिर, पागलबाबा का मंदिर, रंगनाथ जी का मंदिर, प्रेम मंदिर, श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, अक्षय पात्र, वैष्णो देवी मंदिर। निधि वन ,श्री रामबाग मन्दिर आदि भी दर्शनीय स्थान है।

यह कृष्ण की लीलास्थली है। हरिवंशपुराण, श्रीमद्भागवत, विष्णु पुराण आदि में वृन्दावन की महिमा का वर्णन किया गया है। कालिदास ने इसका उल्लेख रघुवंश में इंदुमती-स्वयंवर के प्रसंग में शूरसेनाधिपति सुषेण का परिचय देते हुए किया है इससे कालिदास के समय में वृन्दावन के मनोहारी उद्यानों के अस्तित्व का भान होता है। श्रीमद्भागवत के अनुसार गोकुल से कंस के अत्याचार से बचने के लिए नंदजी कुटुंबियों और सजातीयों के साथ वृन्दावन में निवास के लिए आये थे। विष्णु पुराण में इसी प्रसंग का उल्लेख है। विष्णुपुराण में भी वृन्दावन में कृष्ण की लीलाओं का वर्णन है।

वर्तमान में टटिया स्थान, निधिवन, सेवाकुंज, मदनटेर, बिहारी जी की बगीची, रामबाग, लता भवन (प्राचीन नाम टेहरी वाला बगीचा) आरक्षित वनी के रूप में दर्शनीय हैं। निधि वन श्री बांके बिहारी जी मन्दिर से करीब में ही है। यहां की मान्यता है कि यहीं भगवान कृष्ण गोपियों संग रास रचाते थे।लोक किंवदंती है कि आज भी रात में रास रचाते हैं।

प्राचीन वृन्दावन कहते है कि वर्तमान वृन्दावन असली या प्राचीन वृन्दावन नहीं है। श्रीमद्भागवत के वर्णन तथा अन्य उल्लेखों से जान पड़ता है कि प्राचीन वृन्दावन तो गोवर्धन के निकट कहीं था। यह तब गोवर्धन-धारण की प्रसिद्ध कथा की स्थली वृन्दावन पारसौली (परम रासस्थली) के निकट था। अष्टछाप कवि महाकवि सूरदास इसी ग्राम में दीर्घकाल तक रहे थे। सूरदास जी ने वृन्दावन रज की महिमा के वशीभूत होकर गाया है-हम ना भई वृन्दावन रेणु।

ब्रज का हृदय वृन्दावन को 'ब्रज का हृदय' कहते है जहाँ श्री राधाकृष्ण ने अपनी दिव्य लीलाएँ की हैं। इस पावन भूमि को पृथ्वी का अति उत्तम तथा परम गुप्त भाग कहा गया है। पद्म

पुराण में इसे भगवान का साक्षात शरीर, पूर्ण ब्रह्म से सम्पर्क का स्थान तथा सुख का आश्रय बताया गया है। इसी कारण से यह अनादि काल से भक्तों की श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है। चैतन्य महाप्रभु, स्वामी हरिदास, श्री हितहरिवंश, महाप्रभु वल्लभाचार्य आदि अनेक गोस्वामी भक्तों ने इसके वैभव को सजाने और संसार को अनश्वर सम्पति के रूप में प्रस्तुत करने में जीवन लगाया है। यहाँ आनन्दप्रद युगलकिशोर श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा की अद्भुत नित्य विहार लीला होती रहती है।

निष्कर्ष

कक्षा से बाहर जाकर शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से प्रकृति और मनुष्य के सह-सम्बन्धों को बेहतर तरीक़े से समझने का अवसर हमे प्राप्त हुआ। अपने परिवेश की काफ़ी सारी जानकारी हमे होती है और उसी जानकारी को विषय व विषयवस्तु से जोड़ना और उसमें विस्तार करना शैक्षिक भ्रमण हमे सिखाता हैं। इसके अलावा अपने परिवेश की वस्तुओं और परिवेश में घटित होने वाली घटनाओं का बारीक़ी से अवलोकन करना भी इस यात्रा ने सिखाया। इन सब घटनाओं पर हमें बातचीत का अवसर भी मिला। प्रकृति में कुछ चीज़ों को प्रत्यक्ष देखने पर प्रश्न पूछने, खोजने का कौशल भी विकसित हुआ। दिल्ली के बारे में बहोत कुछ जाना लेकिन बहोत कुछ जानना रह गया क्यों की समय की पाबंदी थी। जिस उद्देश के साथ हम इस यात्रा पर गये थे वह उद्देश प्राप्त हुआ।

इसमें संदेह नहीं कि यात्रा करने में व्यय होता है। खाने पीने की असुविधा होती है। पर मन को उदार बनाने, संकीर्णता दूर करने तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति का विकास करने के लिए देश एंव विदेश की यात्रा अत्यंतावश्यक है। यात्रा करने में विभिन्न मनोरम दृश्यों का आनन्द उठाने के अतिरिक्त दूसरे लोगों से मिलने और नवीन स्थानों को देखने का आनन्द भी मिलता है।